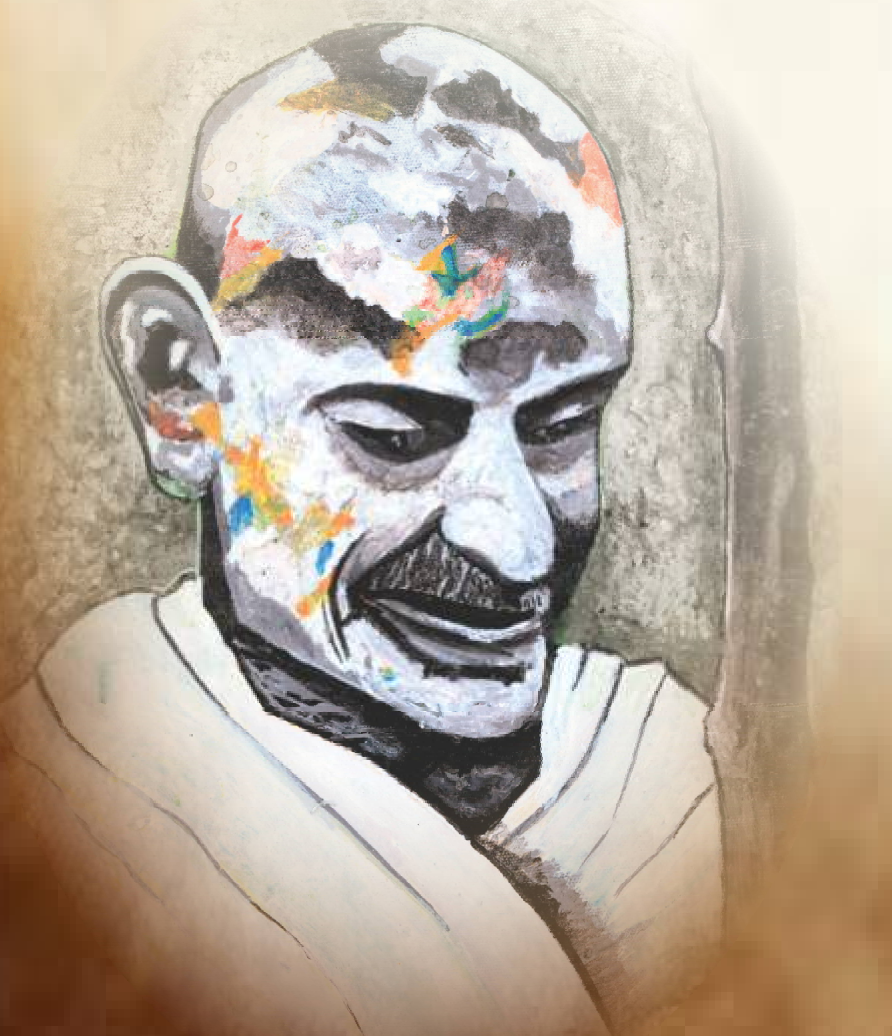
महात्मा गांधी की अध्यक्षता में

बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन - १९२४

एक सचित्र इतिहास



डॉ. सिबी के. जोसेफ
डॉ. बसवराज एन. अक्की

अनुवादक - विवेक कुमार साव
मूल अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद

महात्मा गांधी की अध्यक्षता में

बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन -१९२४

एक सचित्र इतिहास

लेखक

डॉ. सिबी के. जोसेफ

निदेशक, श्री जमनालाल बजाज मेमोरियल लाइब्रेरी एंड
रिसर्च सेंटर फॉर गांधीयन स्टडीज, सेवाग्राम आश्रम, वर्धा

डॉ. बसवराज एन. अक्की

प्रो. इतिहास विभाग (सेवानिवृत्त)
गवर्नमेंट फर्स्ट ग्रेड कॉलेज, डांडेली कर्नाटक

अनुवादक

विवेक कुमार साव

शोधार्थी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

A Project of Library and Research Centre
Sevagram Ashram Pratishthan

सोमेश्वर प्रकाशन, धारवाड

महात्मा गांधी की अध्यक्षता में बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन -१९२४
एक सचित्र इतिहास

द्वारा
डॉ. सिबी के. जोसेफ
और
डॉ. बसवराज एन. अक्की

अनुवादक : **विवेक कुमार साव**
(मूल अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद)

प्रथम संस्करण : जनवरी 2025

प्रतियाँ : 1000

मूल्य : 150/-

ISBN : 978-81-926515-4-5

आकार : 1/8 डेमी, 80 जीएसएम मॅपलिथो कागज

पृष्ठ : viii + 56

प्रकाशक : **सोमेश्वर प्रकाशन**
40, 2 क्रॉस, विजयानंदनगर
धारवाड, कर्नाटक-580001
मो. 9448822051

आवरण : **सुशील कुमार गोटला,** हैदराबाद

डिज़ाइन : **दिलीप पिस्तुलकर,** वर्धा

द्वारा मुद्रित : **रवीन्द्र एस. अकालवाड़ी**
मनोहर प्रिंटिंग प्रेस,
ओल्ड दलाल स्ट्रीट, धारवाड
मो. 9141201170
टेलीफोन 0836-2790030

भूमिका

सन् १९२४ का बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जब महात्मा गांधी ने पहली बार अध्यक्ष पद के रूप में कार्यभार सम्हाला था। यह महत्वपूर्ण आयोजन कर्नाटक के बेलगाम (वर्तमान नाम बेलगावी) में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ३९वां अधिवेशन था। गांधीजी का अध्यक्ष होना एक निर्णायक व महत्वपूर्ण क्षण था, क्योंकि यही एकमात्र कांग्रेस का ऐसा अधिवेशन था जिसकी अध्यक्षता उन्होंने की थी।

गांधीजी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी ग्रामीण साधारण जनसमुदाय की ओर स्थान्तरित हुआ, जिससे यह एक व्यापक जन आंदोलन के रूप में परिवर्तित हो गया। उनकी अध्यक्षता ने कांग्रेस को नयी ऊर्जा दी, जिसने दो गुटों के मध्य व्याप्त विभाजन रेखा को समाप्त करने और विविध क्षेत्रों व धर्मों से जुड़े लोगों को भारतीय स्वतंत्रता के एक साझा लक्ष्य की दिशा में कार्य करने के लिए एकजुट किया। जैसा कि हम महात्मा गांधी के अध्यक्ष पद का शताब्दी वर्ष मना रहे हैं, अतः हमें उनकी साम्प्रदायिक एकता के प्रति संकल्पना की अनुगूँज सुनाई पड़ती है। यह सचित्र पुस्तक, जो सेवाग्राम आश्रम प्रतिष्ठान के पुस्तकालय और अनुसंधान केंद्र द्वारा आयोजित एक परियोजना है, जो महात्मा गांधी की अमिट विरासत के प्रति एक विनम्र अभिवादन है।

इस सचित्र ऐतिहासिक वृतांत वर्णन का मुख्य उद्देश्य युवा पीढ़ी को महात्मा गांधी की अध्यक्षीय नेतृत्व का महत्व और इसके माध्यम से प्राप्त होने वाले मूल्यवान सबक से परिचित कराना है। इस वृतांत को सरल व संक्षिप्त तरीके से प्रस्तुत किया गया है, ताकि यह उन पाठकों के लिए भी सहज हो जिन्हें

इतिहास की कम जानकारी है। इस प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य भारतीय इतिहास के उस महत्वपूर्ण क्षण को याद दिलाकर एकता, सामाजिक सद्भाव, मैत्री और अहिंसा के मूल्यों को बढ़ावा देना है। यह प्रकाशन कांग्रेस अधिवेशन के दौरान घटित प्रमुख घटनाओं व निर्णयों की पड़ताल करता है, जिससे गांधीजी की विचार प्रक्रिया, उनकी नेतृत्व शैली और उनके दृष्टिकोण के बारे में गहराई से समझने का अवसर प्राप्त हो सके।

इसके प्रकाशन की कल्पना बसवराज एन. अक्की द्वारा प्रस्तावित एक अनुसंधान परियोजना से उत्पन्न हुई थी, जिसमें गांधी जी के अध्यक्ष पद के प्रारंभिक महत्व और ३९ वें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन के एक संकलित संस्करण पर चर्चा की गई थी। उम्मीद है कि यह प्रकाशन विविध विषयों के पाठकों को पसंद आएगा, गांधी की विरासत में नई रुचि जगाएगा और भविष्य में शोध कार्य के लिए प्रेरित भी करेगा, साथ ही भारत के स्वतंत्रता संग्राम व इसे रेखांकित करने वाले स्थायी मूल्यों की गहरी समझ को भी बढ़ावा देगा।

सिबी के. जोसेफ
सेवाग्राम आश्रम
४ दिसम्बर, २०२४

आभार

इस परियोजना में सहयोग और योगदान देने वाले विभिन्न व्यक्तियों व संस्थाओं के प्रति हम आभारी हैं। विशेष रूप से, हम सेवाग्राम आश्रम प्रतिष्ठान की अध्यक्ष आशाबेन बोथरा और सचिव विजय तांबे को उनके निस्वार्थ सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद देते हैं। हम मणि भवन गांधी संग्रहालय की अध्यक्ष उषाबेन ठक्कर और माननीय सचिव, पुस्तकालयाध्यक्ष योगेश कामदार व अन्य स्टाफ सदस्यों के प्रति उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हैं। इसके अतिरिक्त, हम बॉम्बे और कर्नाटक के विभिन्न जिलों के अभिलेखागार के स्टाफ और अधिकारियों द्वारा प्रदान की गई सहायता की भी सराहना करते हैं। हम कर्नाटक गांधी स्मारक के अध्यक्ष वूडे पी. कृष्णा और कार्यकारी अध्यक्ष एनआर विशुकुमार के प्रति उनकी सहायता व सहयोग के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। विशुकुमार ने कन्नड़ में अनुवादित पाठ की जांच करने और परियोजना को समय पर पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हम उनके प्रयासों की विशेष रूप से सराहना करते हैं। सर्वोदय इंटरनेशनल ट्रस्ट, बैंगलोर ने अमूल्य तस्वीरों के इस संग्रह को भावी पीढ़ी के लिए प्रकाश में लाने के लिए उत्साहपूर्वक सहयोग किया। हम ट्रस्ट के संस्थापक, अनुभवी राजनयिक पास्कल एलन नाज़रेथ और डी. जीवन कुमार को इस परियोजना में उनके उदार सहयोग और मदद के लिए अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। बेलगाम जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी राहुल शिंदे ने कर्नाटक सरकार और बेलगाम जिला प्रशासन के बीच सेतु की भूमिका निभाते हुए एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। उनके सहयोग ने इस किताब के प्रकाशन को संभव बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हम जॉन एस मूलक्कट्टू, मुख्य संपादक, गांधी मार्ग, नई दिल्ली, पूर्व प्रोफेसर, केन्द्रीय विश्वविद्यालय केरल, एमजी विश्वविद्यालय में गांधीवादी अध्ययन स्कूल के निदेशक, आईआईटी मद्रास में विकास अध्ययन के प्रोफेसर और क्वाजुलू नटाल विश्वविद्यालय, डरबन में शांति अध्ययन में गांधी-लुथुली प्रोफेसरीयल चेयर और डी. जीवन कुमार, पूर्व निदेशक, गांधीवादी अध्ययन केंद्र और बैंगलोर विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर, कर्नाटक राज्य ग्रामीण विकास और पंचायत राज विश्वविद्यालय, गडग में माननीय प्रोफेसर और सर्वोदय इंटरनेशनल ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी के सहयोग की सराहना करते हुए अपना विशेष धन्यवाद व्यक्त करते हैं।

हम सेवाग्राम आश्रम समुदाय के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं, जिसमें कार्यकर्ता और स्टाफ सदस्य भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, हम इस अवसर पर अपने परिवार और मित्रों को भी धन्यवाद देना चाहते हैं जो हमारे लिए सदैव प्रेरणा व निरंतर प्रोत्साहन का स्रोत रहे हैं। उनकी अनुकूलता और सहयोग के बिना यह परियोजना संभव नहीं हो पाती।

सिबी के. जोसेफ
बसवराज एन. अक्की

अनुवादक की ओर से

बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन का महत्व इस तथ्य में निहित है कि १९२४ में महात्मा गांधी ने इस ऐतिहासिक अधिवेशन की अध्यक्षता की थी, जो कि उनके जीवनकाल में कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में उनकी एकमात्र अध्यक्षता थी। यह अधिवेशन स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्षण भी है, जिसने देश की स्वतंत्रता की लड़ाई को नई दिशा देने में विशेष भूमिका निभाई। इस अधिवेशन के सौ साल पूरे होने के अवसर पर, डॉ. सिबी के. जोसफ और डॉ. बसवराज एन. अक्की द्वारा लिखित पुस्तक एक महत्वपूर्ण योगदान है, जो इस ऐतिहासिक घटना के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती है। यह पुस्तक न केवल इतिहासकारों व शोधकर्ताओं के लिए एक लाभदायक सामग्री है, बल्कि आम पाठकों के लिए भी जानकारीपूर्ण और रोचक है। मैं इस किताब का मूल अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद कर खुशी महसूस कर रहा हूँ। यह पुस्तक १९२४ के बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन के महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करती है, जिसमें महात्मा गांधी के अध्यक्ष पद की शुरुआत, उनके भाषण व संदेश, और अधिवेशन के दौरान हुए महत्वपूर्ण निर्णय शामिल हैं।

किताब की अत्यधिक माँग और इसके महत्व को देखते हुए, इसके अनुवाद की आवश्यकता महसूस की गई, जिससे व्यापक पाठक वर्ग तक इसे पहुंचाया जा सके, इसी उद्देश्य से मैंने इसका अनुवाद किया। इस पुस्तक का अनुवाद करने के दौरान, मैंने इस बात का विशेष ध्यान रखा कि मूल किताब की भावना और संदेश को सही तरीके से प्रस्तुत कर पाऊं। मैं आशा करता हूँ कि यह अनुवाद पाठकों को बेलगाम अधिवेशन के महत्व को समझने में सहायक होगा, साथ ही गांधीजी के कार्यों व भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को जानने में रुचि भी प्रदान करेगा। मैं इस पुस्तक के लेखक और

प्रकाशक को विशेष धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस महत्वपूर्ण विषय पर एक सचित्र पुस्तक की रचना की है। मैं उम्मीद करता हूँ कि यह अनुवाद पाठकों को इस महत्वपूर्ण विषय के बारे में जानने में मदद करेगा।

विवेक कुमार साव

हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा

मो. 7003864320

२३ जनवरी, २०२५

बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन, १९२४ : महात्मा गांधी के अध्यक्ष पद की शुरुआत का एक सचित्र इतिहास

परिचय

महात्मा गांधी की राजनीतिक यात्रा १८९३ में दक्षिण अफ्रीका से शुरू हुई, जहाँ वह एक वकील के रूप में बेहतर संभावनाओं की तलाश में पहुँचे थे। शुरू में ही गांधीजी को नस्लवाद और भेदभाव का प्रत्यक्ष सामना करना पड़ा। ७ जून, १८९३ को गांधीजी के जीवन में एक क्रांतिकारी क्षण घटित हुआ, जब उन्हें प्रथम श्रेणी के डिब्बे से हटने से इनकार करने पर पीटरमैरिट्ज़बर्ग रेलवे स्टेशन पर ट्रेन के डिब्बे से बाहर फेंक दिया गया था। इस घटना ने न केवल महात्मा गांधी के जीवन में बदलाव लाया, बल्कि भारत और दक्षिण अफ्रीका दोनों में उनके भविष्य के कार्यों में भी एक महत्वपूर्ण मोड़ ला दिया। शुरुआत में, गांधीजी ने अपने एक साल के लंबे प्रवास के बाद १८९४ में भारत लौटने की योजना बनाई। हालाँकि, अप्रैल १८९४ में अपनी विदाई समारोह के दौरान, उन्हें भारतीयों को मताधिकार से वंचित करने वाले नेटाल सरकार का प्रस्तावित विधेयक के बारे में समाचार आलेख मिला। इससे राजनीति में उनकी रुचि जगी और गांधी ने यहीं रहकर नस्लीय भेदभाव के इस मामले के खिलाफ लड़ने का फैसला किया। चार महीने के भीतर, गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में अन्य भारतीयों के साथ मिलकर अगस्त १८९४ में नेटाल इंडियन कांग्रेस का गठन किया। सन् १८९९ में बोअर युद्ध के दौरान, गांधी जी ने १,१०० सदस्यीय एम्बुलेंस कोर का गठन किया, जिसमें ३००-४०० स्वतंत्र भारतीय और अधिकांश गिरमिटिया मजदूर शामिल थे।



भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापकों की तस्वीर में युवा गांधी मध्य में खड़े हैं।

दक्षिण अफ्रीका के दिनों में गांधीजी का कांग्रेस के साथ जुड़ाव

१९०१ में भारत लौटने पर, महात्मा गांधी ने दिसंबर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में भाग लिया। इस अधिवेशन में, उन्होंने एक प्रस्ताव रखा जिसमें दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया था। यह महात्मा गांधी की कांग्रेस अधिवेशन में पहली भागीदारिता रही। हालाँकि, वह कांग्रेस परिसर में व्याप्त अस्वच्छ स्थितियों और अस्पृश्य भाव से भी बहुत व्यथित थे। कांग्रेस कार्यकर्ताओं को सफाई कार्य करने के लिए मनाने के उनके प्रयासों के बावजूद, उन्होंने इसे मेहतर का कार्य बताते हुए इनकार कर दिया था। तत्पश्चात्, गांधी जी ने स्वयं शौचालय की सफाई करने का फैसला किया जिसका वह उपयोग खुद भी करते थे। इस तरह, गांधी जी ने कांग्रेस और भारतीय समाज में मौजूद सामाजिक भेदभाव की सूक्ष्मता से आलोचना की। दिसंबर १९०२ में महात्मा गांधी की दक्षिण अफ्रीका वापसी, उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। गांधीजी राजनीतिक व वकील के रूप में स्थापित हुए। इस दौरान, उन्होंने भारतीय समुदाय को एकजुट करने और उनके मुद्दों को

उठाने के लिए १९०३ में इंडियन ओपिनियन की स्थापना की। इस अखबार ने न केवल भारतीय समुदाय को एक मंच प्रदान किया, बल्कि गांधी जी को भी अपने विचारों को प्रसारित करने का एक माध्यम दिया। इसके अलावा, गांधी जी ने हिंदुस्तानी लोगों के लिए जोहान्सबर्ग में ट्रांसवाल ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन का भी गठन किया। इस दौरान गांधीजी के अनुभवों का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है। वह जॉन रस्किन की कृति ''अनटू दिस लास्ट'' से काफी प्रभावित थे और उन्होंने १९०४ में फीनिक्स आश्रम की स्थापना की। उसके बाद १९०६ में अंग्रेजों के खिलाफ ज़ुलु विद्रोह के दौरान, गांधी ने घायलों की सेवा के लिए एक एम्बुलेंस कोर का गठन भी किया जो घायल लोगों की देखभाल करता था, जिसने उन्हें ब्रह्मचर्य अपनाने और सत्याग्रह के सिद्धांत को विकसित करने का अवसर प्रदान किया।

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी का सत्याग्रह संघर्ष

महात्मा गांधी के जीवन में एक निर्णायक मोड़ १९०६ में आया, जब ट्रांसवाल सरकार ने एशियाई कानून संशोधन अध्यादेश पारित किया। इस अध्यादेश के अनुसार, सभी भारतीयों को खुद को पंजीकृत करवाने के लिए अनिवार्य बना दिया गया था। गांधीजी और भारतीय समुदाय के लोगों ने इस भेदभाव पूर्ण कृत्य का विरोध करने का निर्णय लिया, जिससे सत्याग्रह का जन्म हुआ। यह गांधीजी द्वारा दक्षिण अफ्रीका के कई सत्याग्रह संघर्षों का शंखनाद था। सन् १९१० में साउथ अफ्रीका यूनियन के गठन के बाद गांधीजी के संघर्ष में और भी तेजी आयी। वहीं, गोपाल कृष्ण गोखले की वर्ष १९१२ में दक्षिण अफ्रीका की यात्रा ने समस्याओं के समाधान करने की उम्मीद जगाई, लेकिन यह उम्मीद ज्यादा दिनों तक नहीं टिक पायी। केप सुप्रीम (The Cape Supreme Court's) के साल १९१३ के फैसले ने भारतीय विवाहों को अमान्य ठहराकर व्यापक आक्रोश को जन्म दिया। अतः गांधी जी ने सत्याग्रह को फिर से शुरू किया, जिसके परिणामस्वरूप उनकी गिरफ्तारी हुई और कारावास हुआ। फिर गांधीजी ने इस दमनकारी

नीतियों के विरुद्ध सत्याग्रह जारी रखा, उन्होंने 'द ग्रेट मार्च' पदयात्रा का नेतृत्व किया, जिससे प्रशासन पर दबाव बना और सरकार को एक आयोग नियुक्त करने के लिए मजबूर होना पड़ा, आयोग ने £3 टैक्स को निरस्त करने व पारंपरिक विवाहों को मान्य करने की सिफारिश की। अंततः २६ जून, १९१४ को द इंडियन रिलीफ बिल पारित हुआ, जिससे इस समस्या का समाधान हो गया। सन् १९०६ से शुरू हुआ संघर्ष समाप्त हुआ। इस अंतिम समझौते के साथ, गांधीजी ने लंदन के रास्ते से होते हुए भारत लौटने का फैसला किया। १८ जुलाई, १९१४ को दक्षिण अफ्रीका छोड़, गांधीजी ९ जनवरी, १९१५ को मुम्बई पहुँचे।

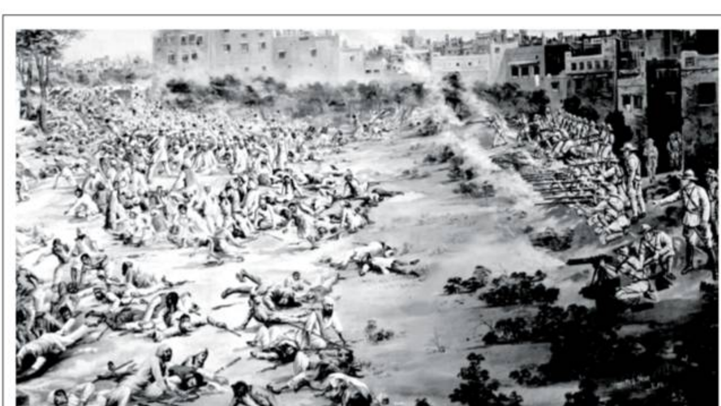


१९१३ का द ग्रेट मार्च, पदयात्रा

गांधी का भारत आगमन, स्वतंत्रता आंदोलन और कांग्रेस के नेता के रूप में उदय

महात्मा गांधी का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के नेता के रूप में उदय एक क्रमिक प्रक्रिया थी। १९१५ में भारत लौटने के बाद, उन्होंने एक वर्ष तक देश का भ्रमण किया, आम लोगों और उनके संघर्षों के बारे में जानकारी प्राप्त की। इस दौरान उन्होंने देश की वास्तविक स्थिति को समझने की कोशिश की और लोगों की समस्याओं को जानने का प्रयास भी किया। उन्होंने भारतीय धरती पर अहिंसक प्रतिरोध का प्रयोग करने के इरादे से

गुजरात के कोचरब में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की। इस आश्रम को बाद में १९१७ में साबरमती में स्थानांतरित कर दिया गया। भारत में गांधीजी ने प्रथम प्रमुख सार्वजनिक उद्बोधन १९१६ में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में दिया। इस अवसर पर उन्होंने विश्वविद्यालय के गणमान्य व्यक्तियों व संरक्षकों से साहसपूर्वक प्रश्न किये तथा अभिजात वर्ग व लाखों गरीब भारतीयों के बीच विद्यमान स्पष्ट विरोधाभास को उजागर किया। इस प्रकार उन्होंने अपने इस प्रथम प्रमुख सार्वजनिक उद्बोधन के माध्यम से भारतीय समाज में व्याप्त असमानता और आर्थिक विषमता के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। यह भाषण महात्मा गांधी का भारतीय राजनीतिक प्रवेश साबित हुआ। दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी के अनुभवों ने उन्हें अहिंसक प्रतिरोध की प्रभावशीलता के बारे में आश्वस्त किया था। उन्होंने इस सिद्धांत को भारत में भी लागू किया, जहाँ उन्होंने बिहार के चंपारण और गुजरात के खेड़ा में शोषित किसानों व मजदूरों के समर्थन में सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व किया। १९१९ में महात्मा गांधी ने रौलेट अधिनियम के खिलाफ सत्याग्रह का नेतृत्व किया, जिसका उद्देश्य राष्ट्रवादी क्रांतिकारियों को कुचलना था। ब्रिटिश सरकार ने हिंसा के साथ प्रतिक्रिया दी, जिसमें अमृतसर के जलियांवाला बाग में निहत्थे प्रदर्शनकारियों का नरसंहार किया गया। इस घटना ने गांधीजी को ब्रिटिश साम्राज्य का विरोधी बना दिया और उन्हें असहयोग आंदोलन शुरू करने के लिए मजबूर कर दिया।



अमृतसर में जलियांवाला बाग हत्याकांड

असहयोग आंदोलन

सन् १९२० तक, गांधीजी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व अपने हाथों में ले लिया था। उनके नेतृत्व में १९२० में कांग्रेस द्वारा शुरू किया गया असहयोग आंदोलन एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थी, यह १८५७ स्वतंत्रता संग्राम के बाद का पहला बड़ा जन आंदोलन था, जिसका उद्देश्य स्वराज प्राप्त करना था। इस आंदोलन को गति प्रदान करने वाले कई कारक थे - प्रथम विश्व युद्ध के बाद आर्थिक मंदी, एनी बेसेंट व बाल गंगाधर तिलक के नेतृत्व में होम रूल आंदोलन, और जलियाँवाला बाग हत्याकांड ने सरकार विरोधी भावना को तीव्र कर दिया था। साथ ही गांधीजी का खिलाफत आंदोलन के प्रति समर्थन भी हिंदुओं और मुसलमानों को एकजुट करने में मददगार साबित हुआ। यह आंदोलन औपचारिक रूप से १ अगस्त, १९२० को व्यापक प्रदर्शनों, हड़तालों और उपवास के साथ शुरू हुआ। वहीं लोकमान्य तिलक के निधन के बाद गांधी कांग्रेस के निर्विवाद नेता बन गए थे। नागपुर अधिवेशन में कांग्रेस ने दिसंबर १९२० में असहयोग आंदोलन को मंजूरी दे दी, साथ ही गांधी द्वारा तैयार किए गए नए संविधान को अपनाया, जिसमें अस्पृश्यता निवारण, खादी के पुनरुद्धार व तिलक मेमोरियल फंड के रूप में एक करोड़ रुपये के संग्रह के लिए प्रस्ताव पारित किए गयें। इस आंदोलन को व्यापक समर्थन मिला, छात्रों ने सरकारी स्कूलों का बहिष्कार किया, वकीलों ने अपनी प्रैक्टिस छोड़ दी, हजारों लोगों ने प्रदर्शनों और हड़तालों में भाग लिया। वैकल्पिक शिक्षा प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा के पांच संस्थान स्थापित किए गए, जिनमें गुजरात विद्यापीठ, जामिया मिलिया इस्लामिया और काशी विद्यापीठ शामिल हैं। मोतीलाल नेहरू, सी. आर. दास और जवाहरलाल नेहरू सहित कई प्रमुख नेताओं ने आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। कई लोगों ने विरोध में अपनी उपाधियाँ और सम्मान तक लौटा दिए, और उनकी भागीदारी के लिए हजारों लोगों को जेल में भी डाल दिया गया। हालाँकि, फरवरी १९२२ में

आंदोलन ने हिंसक रूप ले लिया, जब भीड़ ने चौरी-चौरा में एक पुलिस स्टेशन पर हमला किया, जिसमें २२ पुलिसकर्मी मारे गए। हिंसा से दुखी होकर गांधीजी ने हिंसा भड़कने की जिम्मेदारी लेते हुए इस आंदोलन पर रोक लगा दी। नेहरू ने आंदोलन के रुकने को एक झटका बताया और कहा कि इस झटके ने जेल में बंद कार्यकर्ताओं को बेहद हतोत्साहित किया। परन्तु, अचानक समाप्त होने के बावजूद भी असहयोग आंदोलन ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण मोड़ स्थापित किया, जिससे भारतीयों के बीच एकता मजबूत हुई और इससे सामूहिक आंदोलन की शक्ति को बल मिला, जो उपनिवेशवादी शासन के खिलाफ प्रतिरोध का एक साधन बना।


MAHATMA–THE DICTATOR.

VESTED WITH ALL CONGRESS AUTHORITY.

HAKIM AJMAL KHAN ON BRITAIN'S DUTY

बॉम्बे क्रॉनिकल की रिपोर्ट

राष्ट्रीय नेताओं सहित महात्मा गांधी की गिरफ्तारी

असहयोग आंदोलन के दौरान, महात्मा गांधी और कई अन्य राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था। इन नेताओं में मोतीलाल नेहरू, चित्तरंजन दास, मौलाना आजाद, लाला लाजपत राय और जवाहरलाल नेहरू जैसे लोग शामिल थे। मार्च १९२२ में गांधीजी को स्वयं गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया, उन्हें छः वर्ष की कैद की सज़ा हुई। ३७वां वार्षिक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

अधिवेशन, साल १९२२ में देशबंधु चितरंजन दास की अध्यक्षता में बिहार के 'गया' में आयोजित किया गया। इस अधिवेशन में, महात्मा गांधी के भारत के हित में किये गए कार्यों की कृतज्ञतापूर्वक सराहना की गई और उनके द्वारा शुरू किए गए अहिंसक व असहयोग के सिद्धांतों पर अपना विश्वास जताया गया, जिसका उद्देश्य भारतीय लोगों के अधिकारों को लागू करवाना था। इस अधिवेशन में, कांग्रेस के नेताओं ने सरकार द्वारा बनाए गए परिषदों के बहिष्कार को जारी रखने के फायदे और नुकसान पर चर्चा की। यह चर्चा दो मतों में विभाजित हो गया - एक पक्ष ने बहिष्कार जारी रखने की वकालत की, जबकि दूसरे पक्ष ने परिषदों में भाग लेने का सुझाव दिया। नो-चेंजर्स, जिनका नेतृत्व सी राजगोपालाचारी ने किया था, और गांधी के अनुयायियों ने बहिष्कार जारी रखने की वकालत की। दूसरी ओर, स्वराजवादियों ने सी आर दास के नेतृत्व में परिषदों में भाग लेने का सुझाव दिया। 'गया' कांग्रेस अधिवेशन के बाद, कांग्रेस दो अलग-अलग समूहों में विभाजित हो गई - सी. आर. दास के नेतृत्व में परिवर्तन के पक्षधर और सी. राजगोपालचारी द्वारा परिवर्तन के विरोधी।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा सितंबर १९२३ में दिल्ली में कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन आयोजित किया गया था। दिल्ली कांग्रेस द्वारा काउंसिल-एंट्री पर लगी रोक हटाने के बाद, विधान परिषदों के लिए चुनाव हुए और स्वराजवादियों ने लगभग हर जगह जीत हासिल की। हालाँकि, इस नई सफलता ने स्वतंत्रता संग्राम की एकता को खतरे में डाल दिया। गांधी जी अभी भी जेल में थे और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ३८वां अधिवेशन काकिनाडा, आंध्र प्रदेश में मौलाना मोहम्मद अली की अध्यक्षता में २८ दिसंबर १९२३ से १ जनवरी १९२४ तक आयोजित किया गया था। जहाँ कांग्रेस के दोनों पक्षों के बीच एकता स्थापित करने की कोशिश की गई और अली ब्रदर्स के अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप समझौता हुआ। काकीनाडा कांग्रेस अधिवेशन ने दोनों पक्षों के बीच एकता की नींव रखी, जो बाद में बेलगाम अधिवेशन में गांधी जी के नेतृत्व में मजबूत हुई।

३९वें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन के लिए बेलगाम का चयन

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ३८वें अधिवेशन में एक प्रस्ताव पारित किया गया था, जिसमें कर्नाटक में ३९ वें अधिवेशन का आयोजन करने का निर्णय लिया गया। कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी को इस निर्णय के बारे में सूचित किया गया। कांग्रेस की स्थापना के बाद से बेलगाम जिले के प्रतिनिधि कांग्रेस के लगभग सभी अधिवेशन में भाग लेते आए थे। गंगाधर राव देशपांडे को १८८७ में मद्रास में तीसरे अधिवेशन में भाग लेने का अवसर मिला, जिसमें उनके पिता भी साथ थे। इसके अलावा, गंगाधर राव देशपांडे के राष्ट्रीय नेताओं के साथ मजबूत संबंध थे, जिनमें महात्मा गांधी भी शामिल थे। देशपांडे ने बाल गंगाधर तिलक के साथ बेलगाम व बॉम्बे कर्नाटक के १६वां बाम्बे राज्य (प्रोविन्सीयल) सम्मेलन हुआ जिसमें उनका साथ दिया था। उस समय बेलगाम, बॉम्बे कर्नाटक क्षेत्र में सबसे बड़ा जिला था। अतः मॉडरेट्स और नेशनलिस्ट्स के बीच एकता का आधार तय हुआ, जिसके परिणामस्वरूप दोनों दल फिर से लखनऊ में अगले कांग्रेस अधिवेशन में एक ही झंडे के तहत एकजुट हुए। होम लीग की एक शाखा बेलगाम में स्थापित की गई थी और शहर में एक स्वदेशी स्टोर भी स्थापित किया गया। महात्मा गांधी ने भी बेलगाम का दौरा किया और जनसभाओं को संबोधित किया। गांधीजी के सिद्धांतों से प्रभावित होकर देशपांडे ने अपने पैतृक गांव हुडली में एक आश्रम की स्थापना की। असहयोग आंदोलन के दौरान जिले से बड़ी संख्या में स्वयंसेवियों को जेल में डाल दिया गया। कर्नाटक प्रांतीय कांग्रेस कमेटी ने मार्च १९२४ में हुबली में एक बैठक की, जिसमें ३९वें कांग्रेस अधिवेशन के लिए स्थल का निर्णय लेने के लिए चर्चा की गई। गंगाधर देशपांडे ने अपने जिले बेलगाम में राष्ट्रीय अधिवेशन के लिए उपलब्ध सुविधाओं के बारे में बताया। अन्य दावेदार, मैंगलोर और बीजापुर, क्रमशः सदाशिव राव कामद व हनुमंत राव कौजलागी द्वारा प्रस्तावित किए गए थे। हालांकि, बेलगाम को अंततः मतदान के बाद सबसे अधिक समर्थन मिला। अंत में, महात्मा गांधीजी ने हस्तक्षेप किया, जिससे बेलगाम में अधिवेशन आयोजित करने के लिए सर्वसम्मति से सहमति बनी।

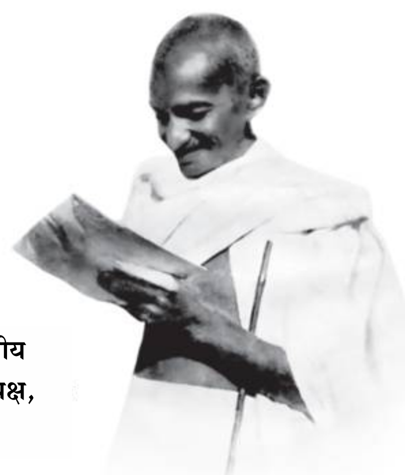


बेलगाम को वर्तमान में बेलगावी के नाम से जाना जाता है।

महात्मा गांधी द्वारा कांग्रेस का अध्यक्ष पद स्वीकार करना

फरवरी १९२४ में, महात्मा गांधी को बिना किसी शर्त के जेल से रिहा कर दिया गया था। उसके बाद, अखिल भारतीय कांग्रेस समिति (ए.आई.सी.सी.) ने २७ जून, १९२४ को अहमदाबाद में एक बैठक की, जहाँ गांधीजी ने अपनी स्वराज योजनाएं प्रस्तुत की। उन्होंने कांग्रेसियों के लिए चार प्रमुख बिंदु - अनिवार्य कताई, कांग्रेस के अधीनस्थ स्तरों पर निर्देशों का पालन, पांच बहिष्कारों का पालन, और राजनीतिक हत्या की निंदा का प्रस्ताव रखा। गांधी के इन प्रस्तावों ने स्वराजवादियों के विरोध को जन्म दिया, जो कताई खंड से असहमत थे, उन्होंने तर्क दिया कि ए.आई.सी.सी. संविधान में संशोधन नहीं कर सकता। हालाँकि, खुले दिल से चर्चा के बाद, समझौता प्रस्ताव पारित किए गए। महात्मा गांधी ने ए.आई.सी.सी. के अधिवेशन के बाद देश भर में हुए हिंदू-मुस्लिम दंगों के जवाब में दिल्ली में २१ दिनों का उपवास किया। उनका उद्देश्य साम्प्रदायिक सद्भाव बहाल करना था। ८ अक्टूबर, १९२४ को हिंदू-मुस्लिम एकता पर एक बयान देने के बाद उन्होंने अपना उपवास तोड़ा। देशपांडे ने अहमदाबाद में गांधीजी से मिलने पर उनसे व्यक्तिगत रूप से अनुरोध किया था कि वह

बेलगाम अधिवेशन की अध्यक्षता करें। इसके अलावा, कुछ प्रांतीय कांग्रेस समितियों ने भी उन्हें यह सम्मान देने के लिए नामित किया था। नवंबर १९२४ में, बॉम्बे में सर्वदलीय सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य साम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देना था। महात्मा गांधी ने २२ नवंबर, १९२४ को सम्मेलन को संबोधित किया और गांधी सहित अन्य नेताओं की अपील से पूरे देश में हिंदू-मुस्लिम समझौते को बहाल करने में मदद मिली। महात्मा गांधी के प्रस्तावों को अखिल भारतीय कांग्रेस समिति (एआईसीसी) के सत्र में स्वीकार किया गया, जिससे गांधीजी बहुत प्रसन्न हुए। इसके बाद, उन्होंने बेलगाम अधिवेशन की अध्यक्षता करने का निर्णय लिया। उनकी स्वीकृति से बेलगाम में अधिवेशन की तैयारियों को बढ़ावा मिला, और अंततः अधिवेशन २६-२७ दिसंबर, १९२४ को आयोजित किया गया।



एम. के. गांधी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष, बेलगाम, १९२४

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षता स्वीकार करने पर महात्मा गांधी

गांधीजी ने अध्यक्षता स्वीकार करने का निर्णय लिया, जो उनकी कर्तव्य की भावना से प्रतिबिंबित, एकता व अहिंसा के प्रति प्रतिबद्ध, और परस्पर सहिष्णुता व सहयोग की शक्ति में उनके विश्वास से प्रेरित था। उन्होंने यंग

इंडिया में अपने लेख ''मे गॉड हेल्प'' में बताया कि बहुत विनती करने, दिल की गहराई से सोच-समझकर, बिना किसी भय डर के आगामी कांग्रेस की अध्यक्षता स्वीकार करने का निर्णय लिया। गांधीजी ने स्वीकार किया कि उनके और शिक्षित भारत के बीच मतभेद थे, किंतु उन्होंने यह भी महसूस किया कि जनमानस में उनकी लोकप्रियता व कई शिक्षित देशवासियों के समर्थन ने उनके लिए इस महत्वपूर्ण समय में कांग्रेस को नेतृत्व करना आवश्यक बना दिया। जैसा कि गांधी ने स्वयं कहा था, ''मुझे लगता है कि मुझे उनका विरोध नहीं करना चाहिए। इसके विपरीत, मुझे देश हित में, जैसी कि मेरी आशा है, खुद को सेवा में लगा देना चाहिए।'' इसके अलावा, उन्होंने अपने देश की सेवा करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर बल दिया, यह कहते हुए कि कांग्रेस से भागना उनके लिए कायरता होगी, और अध्यक्ष पद स्वीकार न करना भी भागने के समान होगा, खासकर जब सब लोग उनके लिए रास्ता आसान बनाने की कोशिश कर रहे हों। गांधीजी का प्राथमिक उद्देश्य विभिन्न दलों व समूहों के बीच एकता और परस्पर सहिष्णुता को बढ़ावा देना था। गांधीजी ने सभी दलों के प्रतिनिधियों से अपील की कि वे कांग्रेस में भाग लें और अपनी सलाह दें, यह जोर देते हुए कि राष्ट्रीय स्तर पर असहयोग या सविनय अवज्ञा के लिए कोई माहौल नहीं था। गांधीजी ने सभी दलों को एक साथ लाने का प्रयास किया, जिससे यह साबित हो सके कि कांग्रेस का असहयोग किसी भी तरह के घृणा या दुर्भावना पर आधारित नहीं था। गांधीजी चाहते थे कि कांग्रेस के नेता अपने निजी जीवन में भी कांग्रेस के आदर्शों व मूल्यों को अपनाएं और उनका पालन करें। उन्होंने उनसे खादी पहनने, विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के बीच एकता को बढ़ावा देने और एक-दूसरे के धार्मिक अनुष्ठानों के प्रति सम्मान दिखाने का आग्रह किया। साथ ही उन्होंने हिंदुओं से यह भी अपील की कि वे कांग्रेस में शामिल होने वाले लोगों का ध्यान रखते हुए अस्पृश्यता को दूर करने में अपना विश्वास दिखाएं।

निष्कर्षतः, गांधीजी का कांग्रेस अध्यक्ष पद स्वीकार करने का निर्णय एकता, अहिंसा और आपसी सहिष्णुता के प्रति उनकी दृढ़ प्रतिबद्धता से प्रेरित था। वे राष्ट्रीय एकता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देना चाहते थे और यह दिखाना चाहते थे कि कांग्रेस का असहयोग नफरत या दुर्भावना पर आधारित

नहीं था। अपने नेतृत्व के माध्यम से, गांधीजी ने कांग्रेसी नेताओं को स्वराज की प्राप्ति के लिए एक साथ काम करने और सहिष्णुता, सम्मान व सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करने का लक्ष्य रखा।



मोहम्मद अली ने एम. के. गांधी को कांग्रेस अध्यक्ष पद का प्रभार सौंप दिया।



मोहम्मद अली ने कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में एम. के. गांधी को अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की।



एम. के. गांधी स्वयंसेवियों को संबोधित कर रहे हैं, पृष्ठभूमि में शुखत अली, मोहम्मद अली, जवाहरलाल नेहरू और अबुल कलाम आज़ाद दिख रहे हैं।

गंगाधर राव देशपांडे - कांग्रेस अधिवेशन के सूत्रधार



गंगाधर राव देशपांडे - स्वागत समिति के अध्यक्ष

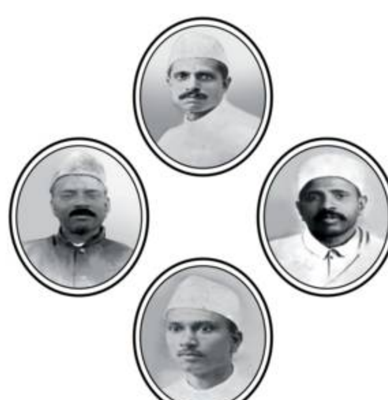
गंगाधर राव देशपांडे बेलगाम जिले के एक प्रमुख नेता थे जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ३१ मार्च, १८७१ को हुडली में जन्मे देशपांडे को अपने जमींदार पिता से प्रेरणा मिली, जिन्होंने उन्हें छोटी उम्र से ही स्वतंत्रता संग्राम में प्रशिक्षित किया था। देशपांडे का पुणे और बॉम्बे में अपने कॉलेज के दिनों के दौरान गोपाल कृष्ण गोखले और बाल गंगाधर तिलक जैसे राष्ट्रीय नेताओं के साथ संपर्क में आने से उनकी स्वतंत्रता संग्राम के प्रति उत्साह में और भी वृद्धि हुई। वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेते थे और कित्तूर चेनम्मा और नारगुंड के बाबा साहेब की वीरता से प्रेरित थे। स्वतंत्रता संग्राम में इनका योगदान बहुआयामी था। उन्होंने १९१६ में बेलगाम में बॉम्बे प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन का आयोजन किया, पुणे व बेलगाम में स्वदेशी स्टोर स्थापित किया, और जीवन भर खादी को बढ़ावा देने का काम करते रहें। उन्होंने असहयोग, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो जैसे महत्वपूर्ण आंदोलनों का अपने क्षेत्र में नेतृत्व किया। उनकी नेतृत्व क्षमता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण यह भी है कि वह काकिनाडा अधिवेशन में कांग्रेस के महासचिव और कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस समिति के अध्यक्ष रहें। उन्होंने बेलगाम में कांग्रेस के ३९ वें अधिवेशन के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जहाँ वे स्वागत

समिति के अध्यक्ष थे। गांधीजी और अन्य राष्ट्रीय नेता देशपांडे द्वारा आयोजित कांग्रेस अधिवेशन की व्यवस्था से बहुत प्रभावित हुए। स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान के लिए उन्हें ''कर्नाटक का शेर'' की उपाधि मिली। देशपांडे की विरासत एक स्वतंत्रता सेनानी और भारतीय स्वतंत्रता के एक चैंपियन के रूप में आज भी लोगों को प्रेरित करती है। ३० जुलाई, १९६० को उनका निधन हो गया, लेकिन भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को कभी नहीं भुलाया जाएगा।

स्वागत समिति

३९ वें कांग्रेस अधिवेशन के आयोजन के प्रति देशपांडे का समर्पण शुरू से ही स्पष्ट था, उन्हें इसकी पहली बैठक में स्वागत समिति का अध्यक्ष चुना गया, वरिष्ठ नेता डी. वी. बेल्वी को उपाध्यक्ष चुना गया। अन्य नेताओं ने भी उपाध्यक्ष की भूमिका निभाई, जबकि माधव राव केम्भवी, भीमाराव पोतदार और एस. एल. सोमन ने सचिव के रूप में काम किया। डॉ. एन. एस. हार्डिरकर ने स्वयंसेवी दल का नेतृत्व किया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि कार्यक्रम सुचारु रूप से चले। कांग्रेस अधिवेशन के विभिन्न पहलुओं की देखरेख के लिए विभिन्न समितियों का गठन किया गया, जिनमें आवास, भोजन और परिवहन शामिल थे। देशपांडे के नेतृत्व में, स्वागत समिति ने कांग्रेस अधिवेशन को सफल बनाने के लिए अथक प्रयास किया।

एम.आर. केम्भवी, महासचिव,
बी.बी. पोतदार, महासचिव,
एस.एल. सोमण, महासचिव,
कौजलगी, स्वदेशी प्रदर्शनी सचिव



विजयनगर - कांग्रेस अधिवेशन का ऐतिहासिक स्थल

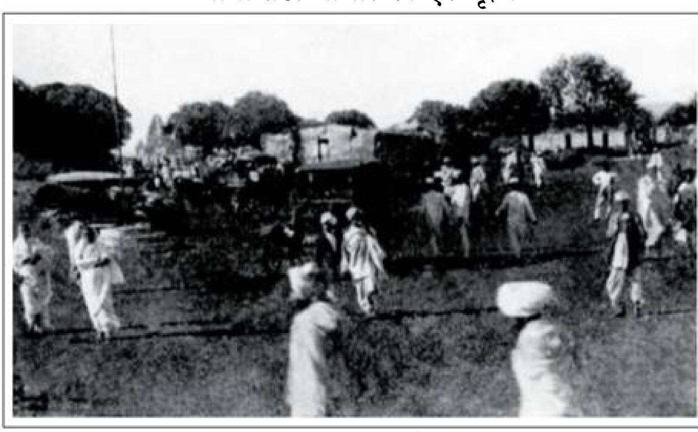
विजयनगर नामक यह स्थल, विजयनगर साम्राज्य के नाम पर रखा गया था, जो कर्नाटक की शक्ति, गौरवशाली इतिहास और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। विजयनगर साम्राज्य, जिसने मध्यकालीन युग में कर्नाटक के हम्पी से लेकर दक्षिण भारत के विशाल भाग पर शासन किया था। इस शक्तिशाली साम्राज्य ने अपने क्षेत्रों को ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और कर्नाटक तक विस्तारित किया। यह तेलुगु, संस्कृत और कन्नड़ में विद्वानों के प्रोत्साहन के लिए प्रसिद्ध था, जिससे साहित्य, कला और वास्तुकला में महत्वपूर्ण योगदान मिला। विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी में अद्भुत धार्मिक और गैर-धार्मिक संरचनाएं हैं, जिनमें एकल-शिला गणेश और लक्ष्मीनरसिम्हा की मूर्तियां शामिल हैं, जो असाधारण शिल्प कौशल का प्रदर्शन करती हैं। आयोजकों द्वारा कांग्रेस अधिवेशन स्थल का नामकरण विजयनगर करना, विजयनगर साम्राज्य के सम्मान, प्रतिष्ठा और बलिदान के मूल्यों को जागृत करना तथा इसके साहित्य, कला व वास्तुकला की गौरवशाली विरासत को प्रकाश में लाना था। महात्मा गांधी ने विजयनगर के बारे में कहा था,''विजयनगर एक विजय थी, न कि स्वराज की, बल्कि संगठन की।''



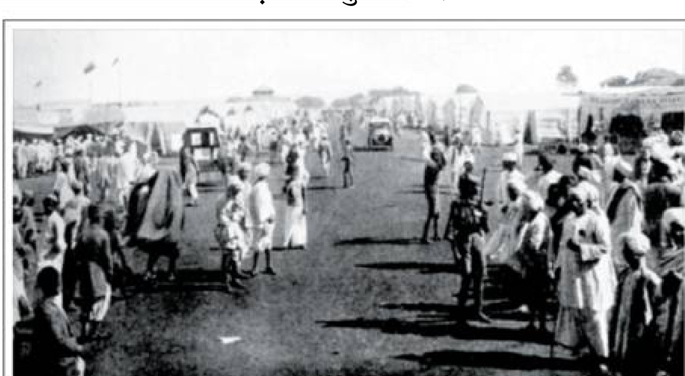
विजयनगर : विजय का शहर



गांधी रोड: बाजार का एक दृश्य



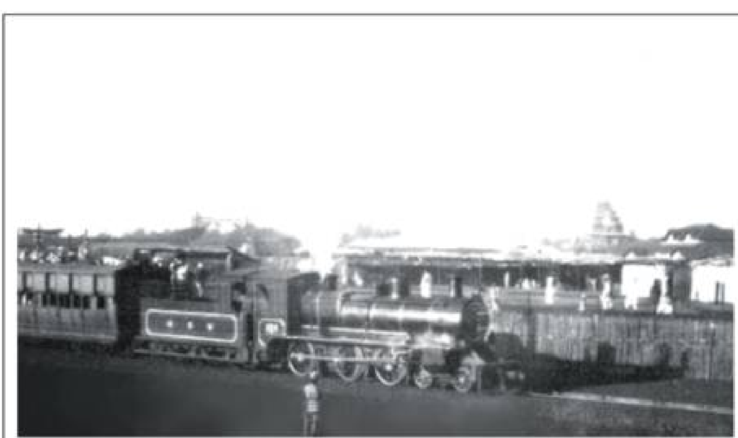
सड़क का मुख्य जंक्शन



विद्यारण्य रोड से लोकमान्य सर्कल तक

विजयनगर रेलवे स्टेशन

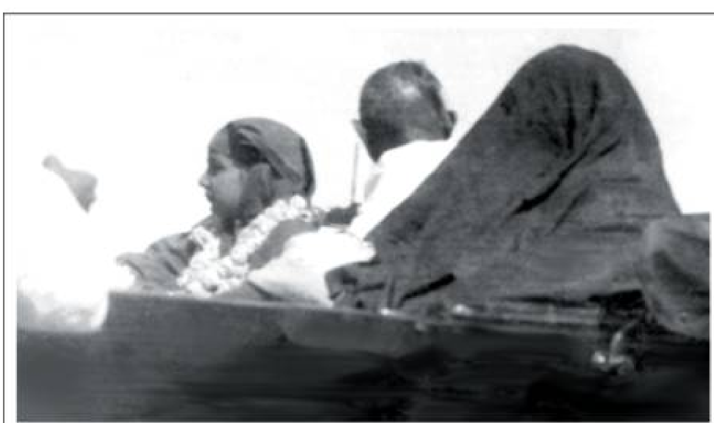
विजयनगर रेलवे स्टेशन कांग्रेस अधिवेशन के लिए पूरे भारत से प्रतिनिधियों के आगमन की सुविधा के लिए बेलगाम में बनाया गया एक अस्थायी स्टेशन था। जो एमएस और एम रेलवे कंपनी द्वारा निर्मित, शहर के बाहरी इलाके में स्वागत समिति के अनुरोध पर बनायी गयी थी। विजयनगर रेलवे स्टेशन को देश के प्रमुख शहरों से रेलवे लाइन के माध्यम से जोड़ा गया था। यह रेलवे लाइन उत्तर में पुणे और मुंबई से जुड़ती थी, जबकि दक्षिण में हुबली और बैंगलोर से जुड़ती थी। रेलवे स्टेशन को कांग्रेस अधिवेशन स्थल के पास बनाया गया था, जिससे प्रतिनिधियों के लिए अधिवेशन में भाग लेना आसान हो गया। विजयनगर रेलवे स्टेशन का निर्माण इस बात का प्रमाण है कि कांग्रेस ने अधिवेशन की मेजबानी के लिए कितनी सावधानी और योजना के साथ काम किया था। यह स्टेशन अधिवेशन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों के लिए एक सुविधाजनक और सुव्यवस्थित प्रबंध था, जो आयोजकों की योजना और संगठन क्षमता को दर्शाता है।



विजयनगर रेलवे स्टेशन



**गांधीजी, बेगम अमजदी बानो और अन्य लोगों के साथ
वाहन में कांग्रेस पंडाल की ओर जाते हुए**



**एम.के.गांधी और अन्य लोगों को
ले जा रहे वाहन का पीछे का दृश्य**

गोपुरा - स्वतंत्रता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक

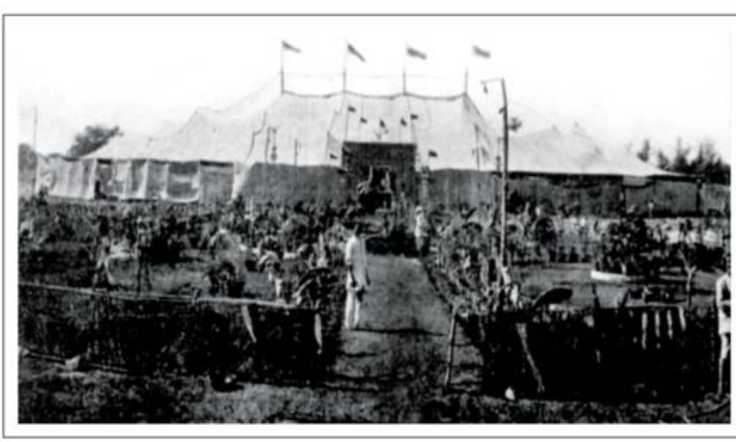
गोपुरा, कांग्रेस अधिवेशन के पंडाल का ७० फुट लंबा मुख्य प्रवेश द्वार, स्वतंत्रता और कर्नाटक की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक प्रतिष्ठित प्रतीक था। इसकी रूप-रेखा कर्नाटक के एक प्रतिभाशाली युवा कलाकार द्वारा तैयार की गई थी, जो उस समय बॉम्बे में श्रीनिवास एंड कंपनी चला रहे थे। यह विजयनगर (पूर्व में बेल्लारी) जिले के होस्पेट तालुक में हम्पी में प्रतिष्ठित विरुपाक्ष मंदिर के शिखर की प्रतिकृति थी। मंदिर का मुख्य शिखर श्री कृष्णदेवराय द्वारा निर्मित किया गया था, जो द्रविड़ वास्तुकला शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। गोपुरा की जटिल बनावट और मध्यकालीन शिल्प कौशल को रात में इसके विद्युत प्रकाश व्यवस्था के माध्यम से प्रदर्शित किया गया था, जिससे स्थल की भव्यता में और भी वृद्धि हुई।



गोपुरा, मंडप का मुख्य द्वार

विजयनगर में कांग्रेस का खेमा

कांग्रेस का अधिवेशन लगभग ८० एकड़ क्षेत्र में फैले बेलगाम एक्सटेंशन के मैदान में आयोजित किया गया था। इसमें ग्रामीण जीवन के आकर्षण और शहरी जीवन की सुविधाओं का मिश्रण था। यह विशाल खादी का टेंट, जिसका आकार ३०० फीट x २२० फीट था, कांग्रेस के लिए विशेष रूप से कोलकाता के मेसर्स ए. एन. मुखर्जी द्वारा बनाया गया था। यह विशाल टेंट आसानी से १२,००० लोगों को समाहित कर सकता था और उस समय इसे दुनिया का सबसे बड़ा टेंट माना जाता था। स्वागत समिति ने काकीनाडा की स्वागत समिति से टेंट किराए पर लिया था। बाद में, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने अपने अधिवेशन के लिए स्थायी रूप से तम्बू और गैलरी खरीदने का संकल्प लिया और फिर इसके लिए १३,५०० रुपये की अतिरिक्त राशि का भुगतान किया, जिससे कुल लागत ३७,००० रुपये हो गई। पंडाल के सामने एक सुंदर बाग़ बनाया गया था, जिसमें बीच में एक संगमरमर का फव्वारा था। यह बाग़ कलात्मक रूप से डिज़ाइन किया गया था और इसकी सुंदरता ने स्थल की भव्यता को और भी बढ़ा दिया था।



टेंट व उद्यान के सामने का दृश्य

विद्यारण्याश्रम : अध्यक्ष निवास स्थान

विद्यारण्यश्रम, जिसे अध्यक्ष निवास स्थान के रूप में भी जाना जाता है, जो १९२४ के बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन के दौरान महात्मा गांधी जी के लिए विशेष रूप से निर्मित कुटिया थी। यह कुटिया सब्जेक्ट्स कमिटी हॉल के पास स्थित था। इस निवास को बनाने का मकसद एक साधारण खादी से बनी छोटी सी कुटीर बनाना था, लेकिन यह एक बड़े और अच्छे घर की संरचना में बदल गया। गांधीजी ने विनोदपूर्वक इसे ''खद्दर पैलेस'' कहा, क्योंकि उन्हें महसूस हुआ कि यह एक अनावश्यक विलासिता है जो उनके सरलता और सादगी के मूल्यों के अनुरूप नहीं है। दिलचस्प बात यह भी है कि आयोजकों को विद्यारण्याश्रम बहुत सुंदर लगा, जैसे कि यह एक महल हो, लेकिन इसकी कीमत बहुत कम थी, जैसे किसी छोटे से कुटीर की। गांधीजी को पहले तो यह निवास स्थान उतनी पसंद नहीं आयी, लेकिन बाद में उन्होंने यहाँ दी गई जगह और भीड़ से अपनी सुरक्षा के लिए की गई व्यवस्था की सराहना की।



विद्यारण्यश्रम - अध्यक्ष निवास स्थान (निवास स्थान के सामने महादेव देसाई, जमनालाल बजाज, गंगाधरराव देशपांडे और अन्य)



बेगम अमजदी बानो और अन्य लोगों के साथ
कांग्रेस अध्यक्ष निवास स्थान की ओर जाते हुए गांधीजी

अध्यक्ष और नेताओं का जुलूस

१९२४ का बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन एक ऐतिहासिक घटना थी जिसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की भव्यता को प्रदर्शित किया। जैसे ही महात्मा गांधी के नेतृत्व में अध्यक्ष व नेताओं का जुलूस गोपुरा से होकर गुजरा, भीड़ जोरदार जयकारे लगाने लगी। माहौल जोशपूर्ण था, ''महात्मा गांधी की जय,'' ''वंदे मातरम'' और ''अल्लाहु अकबर'' जैसे नारे हवा में गूंज रहे थे। वालंटियर कोर के कमांडर डॉ. एन. एस. हार्डिकर के मार्गदर्शन में जुलूस पूर्ण सामंजस्य के साथ आगे बढ़ा, जिसमें कई प्रमुख नेता समूह में चल रहे थे, जिनमें शामिल थे - देशबंधु सी. आर. दास, डॉ. सैफुद्दीन किचलू, गंगाधरराव देशपांडे, पंडित मदन मोहन मालवीय, लाला लाजपत राय, मौलाना मोहम्मद अली, सरोजनी देवी, मौलाना शौकतअली, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, पंडित मोतीलाल नेहरू, सी. राजगोपालाचारी, विट्ठलभाई पटेल, टी. प्रकाशम, राजेंद्र प्रसाद, के वेंकटप्पाय्या पंतुलु, जमनालाल बजाज, डॉ. मुंजे, ए रंगास्वामी अयंगर और पंडित जवाहरलाल नेहरू सहित आदि अन्य नेता। इसमें गांधीजी धोती पहने अकेले चले, उनमें

सादगी और विनम्रता की आभा झलक रही थी। जैसे ही जुलूस मंडप पर पहुंचा, भीड़ ने खुले दिल से गांधीजी का स्वागत करते हुए खड़े होकर तालियां बजाईं। यह जुलूस भारत की स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण क्षण की शुरुआत थी, जिसमें गांधीजी के नेतृत्व और दृष्टिकोण ने पूरे देश को ब्रिटिश शासन के खिलाफ एकजुट करने के लिए प्रेरित किया।



कांग्रेस का टेंट और बगीचे के सामने का दृश्य



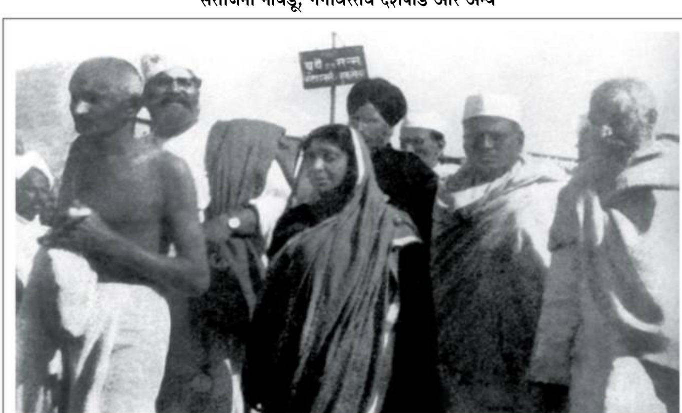
अधिवेशन के उद्घाटन के दिन अध्यक्ष और नेताओं का जुलूस।
पृष्ठभूमि में गोपुर दिख रहा है।



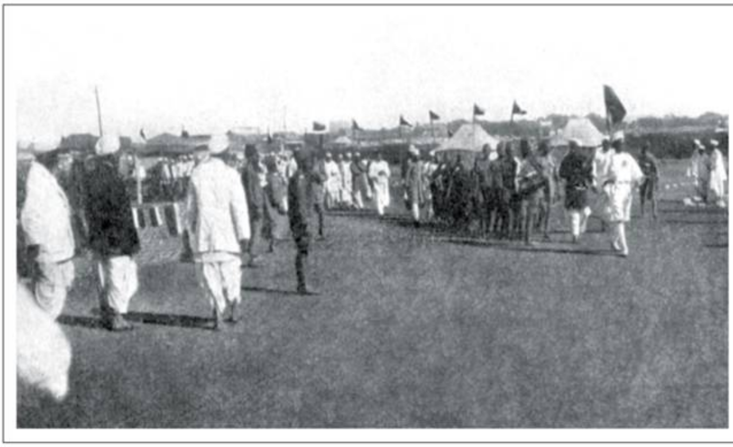
उद्घाटन के दिन नेताओं के जुलूस में गांधी, शौकत अली,
मदन मोहन मालवीय, सरोजिनी नायडू, गंगाधरराव देशपांडे और अन्य



उद्घाटन के दिन नेताओं के जुलूस में महात्मा गांधी, शौकत अली, मदन मोहन मालवीय,
सरोजिनी नायडू, गंगाधरराव देशपांडे और अन्य



कांग्रेस अध्यक्ष पद के जुलूस में अन्य नेताओं के साथ गांधी और सरोजिनी नायडू



उद्घाटन दिवस पर अध्यक्ष और नेताओं के जुलूस का एक दृश्य



कांग्रेस अध्यक्ष पद के जुलूस में
गांधी और सरोजिनी नायडू का एक और दृश्य

वंदे मातरम, स्वागत गीत और गंगूबाई हंगल द्वारा राजकीय गीत का मधुर गायन

कांग्रेस अधिवेशन की कार्यवाही वंदे मातरम के गायन के साथ शुरू हुई, जिसमें सभी उपस्थित लोगों ने खड़े होकर सम्मान प्रकट किया। धारवाड के नेशनल स्कूल की एक बैच की लड़कियों को स्वागत गीत गाने का काम सौंपा गया था, और उसी स्कूल में पढ़ रही गंगूबाई हंगल ने नारायण हुइलगोल द्वारा लिखित गीत 'उदयवगली नम्मा चेलुवा कन्नड़ नाडु' (उठो, हमारी प्यारी कन्नड़ भूमि) का गायन किया। यह गीत कांग्रेस अधिवेशन के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया था और पहली बार राजकीय गीत के रूप में इसका इस्तेमाल किया गया। गंगूबाई महज ११ साल की थी और उनकी दमदार और भावपूर्ण आवाज ने श्रोताओं पर अमिट छाप छोड़ा। उनका जन्म धारवाड में एक कृषक चिक्कुराओ नादिगर और कर्नाटक संगीत की गायिका अंबाबाई के घर हुआ था। उनकी माता ने उन्हें बचपन से ही संगीत की शिक्षा देनी शुरू कर दी थी। गंगूबाई के शानदार प्रदर्शन की महात्मा गांधी, कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष, और उनके भावी गुरु रामभाऊ कुंडगोलकर, जिन्हें सावई गंधर्व के नाम से भी जाना जाता है, ने सराहा। इस घटना ने एक प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय गायिका के रूप में उनके शानदार करियर की शुरुआत की, जो कई दशकों तक चला और उन्हें कई प्रशंसाएँ मिली।



गंगूबाई हंगल की तस्वीर

स्वागत समिति के अध्यक्ष का स्वागत भाषण

स्वागत समिति के अध्यक्ष गंगाधर राव बालकृष्ण देशपांडे ने कनाडा में एक संक्षिप्त भाषण के माध्यम से सन् १९२४ को बेलगाम, कर्नाटक में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ३९ वें अधिवेशन में प्रतिनिधियों का स्वागत किया। अंग्रेजी में एक विस्तृत मुद्रित संबोधन प्रतिनिधियों के बीच वितरित किया गया। देशपांडे ने अपने संबोधन में कार्यक्रम की मेजबानी के लिए अपना सम्मान और विनम्रता व्यक्त की। उन्होंने प्रांत के सामने आने वाली चुनौतियों को स्वीकार किया, जिनमें कई विभाजन, संसाधनों की कमी, और कार्यक्रम आयोजित करने में कठिनाइयाँ शामिल रहीं। साथ ही उन्होंने कांग्रेस अधिवेशन के महत्व पर भी प्रकाश डाला। यह देखते हुए कि यह पहली बार था कि बेलगाम जैसे छोटे शहर ने इस कार्यक्रम की मेजबानी की थी। इसके अलावा उन्होंने हिंदुओं, मुसलमानों और अन्य धर्मों के लोगों के एक साथ आने का उदाहरण देते हुए भारतीयों के बीच एकता के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीक खादी के उत्पादन में हुई प्रगति की भी सराहना की। उन्होंने कहा, ''हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि आज हमारे बीच महात्मा गांधी जी हैं, जो एकता और नेतृत्व के प्रतीक हैं। उनके नेतृत्व में, मुझे विश्वास है कि हम न केवल अपनी खोई हुई जमीन वापस प्राप्त करेंगे, बल्कि जल्द ही हम अपने पोषित लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे।'' देशपांडे ने महात्मा गांधी से अधिवेशन की अध्यक्षता करने का अनुरोध करते हुए अपने संबोधन का समापन करते हुए कहा - ''मेरे पास ऐसी भावनाएं हैं जिनका वर्णन करने के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है, मैं महात्मा जी से अध्यक्षता करने का अनुरोध करता हूँ।'' इसके बाद गांधी जी धोती पहने और हाथ में खद्दर लिए, उत्साहपूर्ण जयघोष के बीच सभास्थल मंच पर आए। उन्हें स्वागत समिति के अध्यक्ष द्वारा एक चंदन की लकड़ी के बॉक्स में रखी कर्नाटक हैंडबुक की एक प्रति भेंट की गई, जिस पर लिखा था - ''आपकी जानकारी के लिए, सर''। गांधी जी ने उपहार को एक ''जीवंत मुस्कान'' के

साथ स्वीकार किया, और फिर उन्होंने दस मिनट तक हिंदी में उपस्थित लोगों को संबोधित किया। महात्मा गांधी द्वारा हिंदी में बोलने से वह एक व्यापक दर्शक वर्ग से जुड़ सकें और अहिंसा व राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देने का संदेश दे सके।



कांग्रेस अधिवेशन में गांधी

बैठने की व्यवस्था

३९वें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन में बैठने की व्यवस्था पिछले अधिवेशन के समान ही की गयी, जिसमें राष्ट्रीय शैली का प्रभावशाली प्रकटीकरण हुआ था। पंडाल के पश्चिमी भाग में एक ऊंचा मंच था, जिस पर एक सुंदर रूप से सजा हुआ मंडप था। यह मंडप खादी और फूलों के हारों से सजाया गया था। उस मंडप के केंद्र में लोकमान्य तिलक का एक आदमकद चित्र प्रमुखता से लगाया गया था, जिसके बगल में महात्मा गांधी का आदमकद चित्र भी लगा हुआ था। मंडप के सामने विद्यारण्य, उनके शिष्यों और शिव, विष्णु व लक्ष्मी की तस्वीरें प्रमुखता से प्रदर्शित की गई थीं, जो क्रमशः विनाश, निर्माण और शक्ति के विकास के प्रतीकात्मक रूप में थीं। अन्य उल्लेखनीय चित्रों में मैसूर के महाराजा, पूर्व व वर्तमान नेताओं और पी.सी. राय के साथ उनके चरखे के चित्र शामिल थे। मंडप के दाहिनी ओर

महिलाएँ बैठी थीं, उनके साथ खाकी में पुरुषों का एक समूह और गहरे रंग की कलादगी साड़ी में महिलाएँ थीं। विशिष्ट अतिथिगण, ए.आई.सी.सी. सदस्य और स्वागत समिति के सदस्य मंडप के दोनों ओर बैठे थे। प्रतिनिधि जमीन पर बैठे थे, जबकि आगंतुक सभी ओर दीर्घा में बैठे थे। मंच पर महात्मा गांधी के साथ शिव प्रसाद गुप्ता, एन.सी. केलकर, मौलाना हसरत मोहानी, पी. शिवा राव और जनाब याकूब हसन सहित कई प्रमुख नेता शामिल थे। उपस्थित अन्य उल्लेखनीय हस्तियों में एस. सत्यमूर्ति, पुरूषोत्तमदास टंडन, पंडित सुंदरलाल और शंकरलाल बैंकर भी शामिल थे। स्वागत समिति के अध्यक्ष ने गांधीजी का बड़े धूमधाम से स्वागत किया और उनका सम्मान माला पहनाकर किया। इसके साथ ही, अन्य नेताओं को भी माला पहनाकर सम्मानित किया गया। मंच पर बैठने की व्यवस्था योजनाबद्ध तरीके से की गई थी, जिसमें गांधीजी के दाहिनी ओर लाला लाजपत राय व श्रीमती सरोजनी देवी को स्थान दिया गया था, जबकि उनके बायीं ओर पंडित मालवीय व देशबंधु सी. आर. दास विराजमान थे। मौलाना मोहम्मद अली और मौलाना शौकत अली महात्मा गांधी के सामने बैठे थे।



गांधीजी वालंटियर को संबोधित कर रहे हैं, पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय ध्वज दिखाई दे रहा है।

महात्मा गांधी का अध्यक्षीय भाषण

महात्मा गांधी का अध्यक्षीय भाषण वास्तव में कांग्रेस के इतिहास में सबसे संक्षिप्त था। यह बात और भी दिलचस्प हो जाती है कि उन्होंने अपना भाषण, सभा में केवल कुछ अंशों में प्रस्तुत किया था। इससे पहले ही उनका भाषण सभी को वितरित किया जा चुका था, इसलिए इसे पढ़ा हुआ मान लिया गया। महात्मा गांधी ने १९२४ के बेलगाम अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्षीय भाषण में उस समय देश व दुनिया के सामने आने वाली प्रमुख समस्याओं पर प्रकाश डाला। अपने भाषण में, उन्होंने अध्यक्षता स्वीकार करने में विनम्रता और अनिच्छा की भावना व्यक्त की, कहा - ''मित्रों, मैंने बहुत सारे संदेह के बाद आज आपके द्वारा मुझे दिए गए सम्मान का भार स्वीकार किया है।'' महात्मा गांधी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आंतरिक और बाह्य परिस्थितियों को स्वीकार किया जिन्होंने उन्हें अध्यक्षता स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने एकता और अहिंसा की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि मैं सविनय अवज्ञा की शपथ लेता हूँ। लेकिन स्वराज की प्राप्ति के लिए सविनय अवज्ञा तब तक असंभव है जब तक हम विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करने की शक्ति हासिल नहीं कर लेते। उन्होंने भारत के तत्कालीन लक्ष्य को परिभाषित करते हुए बताया कि किसी भी सांप्रदायिक या बांटने वाले प्रतिनिधित्व को समाप्त करने की आवश्यकता है। महात्मा गांधी ने अपने भाषण में कई महत्वपूर्ण बातें कहीं। उन्होंने कहा कि एक सामान्य निर्वाचन क्षेत्र को निष्पक्ष रूप से अपने प्रतिनिधियों का चयन करना चाहिए, केवल योग्यता के आधार पर। गांधीजी ने हिंदू-मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता को हटाने और खादी के प्रचार पर जोर दिया। उन्होंने युवाओं से स्वराज के ''वास्तविक सैनिक'' बनने के लिए प्रोत्साहित किया। साथ ही उन्होंने कहा कि अपने सभी जिलों में जाओ और खादी का संदेश, हिंदू-मुस्लिम एकता का विचार, समानता के लिए संदेश फैलाओ और देश के युवाओं को एकत्र कर उन्हें स्वराज का सच्चा सिपाही बनाओ। गांधीजी ने स्वराजवादियों और अपरिवर्तनवादीयों के बीच एकता की आवश्यकता पर भी बल दिया और कहा कि यदि अपरिवर्तनवादी

और स्वराजवादी अभी भी एक-दूसरे के प्रति द्वेष रखते हैं, और यदि उनमें एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या है, तो स्वराज हासिल करना संभव नहीं होगा। यह तभी संभव होगा जब आप मनमुटाव को दूर कर देंगे, सारी ईर्ष्या, सारा क्रोध और अपने दिल में जो कुछ भी बुरा है उसे छोड़ देंगे। उन्होंने स्वराजवादियों और अपरिवर्तनवादियों के बीच एकता के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि उन्हें अपने पिछले मतभेदों को भुलाकर स्वराज की प्राप्ति के लिए मिलकर काम करना चाहिए। वे दुनिया को दिखाएं कि वे स्वतंत्रता की खोज में एकजुट हैं। अंत में, गांधी ने कहा, ''आइए हम सभी सत्याग्रही बनने का प्रयास करें। इस प्रयास के लिए किसी भी ऐसी गुणवत्ता की आवश्यकता नहीं है जो हममें से सबसे निम्न को प्राप्त न हो। क्योंकि, सत्याग्रह हमारे अंदर की आत्मा का एक गुण है। यह हम सभी में निहित है। स्वराज की तरह, यह हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। आइए इसे जानें।''



तस्वीर में गांधीजी अध्यक्षीय भाषण दे रहे हैं।



अध्यक्षीय भाषण देते हुए गांधी जी का एक और दृश्य

महात्मा गांधी ने अंग्रेजी में अपनी बात जारी करते हुए कहा कि वह दर्शकों को दस मिनट से अधिक देर तक नहीं रोकेंगे। उन्होंने स्वीकार किया कि हिंदुस्तानी में बोलने में उन्होंने अपेक्षा से अधिक समय लिया। गांधी ने यह भी उल्लेख किया कि उनके संबोधन की प्रतियाँ विभिन्न भाषाओं में वितरित की गई थीं, इसलिए वह इसे नहीं पढ़ेंगे। वास्तव में, उनके लिखित भाषण में कई विषयों को शामिल किया गया था, जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए माहौल तैयार किया। उन्होंने कांग्रेस के परिवर्तन पर चर्चा की, जो एक प्रस्ताव पारित कर सरकार को भेजने वाले संगठन से एक शक्तिशाली संगठन में बदल गया, जिसका पूरा ध्यान आंतरिक विकास पर था। उन्होंने बताया कि कैसे कांग्रेस ने अपना ध्यान आंतरिक शक्ति विकसित करने पर केंद्रित किया। उन्होंने असहयोग आंदोलन के कारणों और वर्तमान चुनौतियों पर भी चर्चा की। इसके अलावा, उन्होंने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार, ब्रिटिश उत्पादों, शुल्क (कर), मशीनरी के उपयोग और चरखा, कताई के महत्व

जैसे आर्थिक व सामाजिक मुद्दों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता के उन्मूलन, स्वराज योजना, स्वतंत्रता, और स्वराज पार्टी के महत्व पर भी जोर दिया। इसके अलावा, राष्ट्रीय मुद्दों पर भी चर्चा की, जैसे कि राष्ट्रीय विद्यालयों के रखरखाव, बेरोजगार असहयोग आंदोलनकारीयों की समस्या, नशीले पदार्थों के दुरुपयोग, और बंगाल के दमन पर चर्चा की और असहयोग (नॉन कॉपरेशन) की आवश्यकता के महत्व पर भी विशेष जोर दिया।

महात्मा गांधी ने देशबंधु दास द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव के महत्व पर जोर दिया, यह कहते हुए कि यह राष्ट्र के लिए एक क्रांतिकारी परिवर्तन है। उन्होंने श्रोताओं से आग्रह किया कि वे प्रस्ताव पर ध्यान से विचार करें और अगर वे इसमें विश्वास करते हैं तो इसे पूरे दिल से स्वीकार करें। गांधी ने यह भी उल्लेख किया कि यह प्रस्ताव केवल राष्ट्र के लिए नहीं है, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए है जो स्वराज प्राप्त करने के लिए काम करने को तैयार हैं। गांधी ने अपनी टिप्पणी को इस बात पर जोर देकर समाप्त किया कि स्वराज प्राप्त करने के लिए सच्चाई और दृढ़ विश्वास बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने श्रोताओं से आग्रह किया कि वे खुद के प्रति सच्चे रहें और एक सामान्य लक्ष्य की दिशा में एक साथ काम करें। उनका संबोधन कॉल-टू-एक्शन था, जिसमें भारतीयों से अहिंसक माध्यमों से स्वतंत्रता प्राप्त करने की दिशा में कार्य करने का आग्रह किया गया था। उनका हिंदू-मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता को खत्म करने, खादी को बढ़ावा देने और स्वराजवादियों और गैर-परिवर्तनकारियों के बीच एकता पर उनका जोर देना सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सुधार के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

राष्ट्रीय ध्वज

महात्मा गांधी ने एक एकीकृत भारत के लिए एक राष्ट्रीय ध्वज का प्रस्ताव रखा, जो सभी भारतीयों का प्रतिनिधित्व करेगा, चाहे उनकी धार्मिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। सन् १९२१ में, उन्होंने स्वराज के ध्वज की अवधारणा पेश की, जिसमें एक चरखा केंद्र में था, जो आत्मनिर्भरता और विदेशी बाजारों से स्वतंत्रता का प्रतीक था। इस दृष्टिकोण को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में लागू किया गया, जिसमें बेलगाम भी शामिल था। वालंटियर्स के शिविर के पास खुले मैदान पर एक विशाल ध्वजदंड खड़ा किया गया था, जिसमें चरखे के साथ वाला खादी से बना राष्ट्रीय ध्वज भव्य समारोह के साथ फहराया गया। ध्वज को प्रतिदिन सम्मान के साथ फहराया और उतारा जाता, जिसमें पूरा शिविर एकजुट होकर अनुष्ठान में भाग लेता था। वालंटियर अपनी वर्दी में तैयार होकर घोड़े के नाल के आकार में राष्ट्रीय ध्वज का अभिवादन करते थे, जिससे बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा होते थे। कांग्रेस स्वयंसेवकों के इतिहास में यह दैनिक राष्ट्रीय ध्वज फहराना एक नई परंपरा थी।



कांग्रेस अधिवेशन में ध्वजारोहण के दौरान गांधीजी

स्वदेशी प्रदर्शनी

प्रदर्शनी समिति, सचिव एच.एस. कॉजलागी के नेतृत्व में, कांग्रेस अधिवेशन की स्वदेशी प्रदर्शनी का कुशलतापूर्वक प्रबंधन किया। समिति के सदस्यों में एन.आर. केम्भावी, होसकोप्पा कृष्ण राव, डॉ. सावनूर, एन.एच. डांबल, वामनराव फटारफेकर और शंकरराव शिरगांवकर शामिल थे। स्वदेशी प्रदर्शनी एक विशाल ३५०x२०० फीट के क्षेत्र में आयोजित की गई थी, जिसे चार अलग-अलग अनुभागों में विभाजित किया गया था :-

(क) संग्रहालय अनुभाग में भारतीय कला और उद्योगों का प्रदर्शन किया गया था, जिसमें मैसूर सरकार ने अपने राज्य की कृषि व उद्योग में हुई तरक्की को प्रदर्शित किया था।

(ख) प्रदर्शन अनुभाग में विभिन्न प्रांतों के लोगों ने कपास ओटने और सूत बनाने की प्रक्रियाओं का प्रदर्शन किया।

(ग) बिक्री अनुभाग में भारतीय निर्मित वस्तुओं को बेचने के लिए स्टॉल प्रदान किए गए थे।

(घ) आयुर्वेदिक अनुभाग में भारतीय औषधीय जड़ी-बूटियों और उनके सारों का प्रदर्शन किया गया था, जो १९२४ में शुरू की गई एक नई विशेषता थी। राजेंद्र प्रसाद ने स्वदेशी प्रदर्शनी का उद्घाटन भाषण दिया था। प्रदर्शनी ने भारतीय उद्योगों, कला और संस्कृति को बढ़ावा दिया, जो कांग्रेस की स्वदेशी भावना के अनुरूप थी।



स्वदेशी प्रदर्शनी का द्वार

कताई

बेलगाम में कांग्रेस अधिवेशन में कताई ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अधिवेशन के दौरान सूत कातने में रुचि रखने वाले प्रतिनिधियों के लिए एक विशेष हॉल बनाया गया था, जिसमें चरखे व उससे सम्बंधित अन्य सहायक उपकरण रखे गए थे। कलकत्ता में खादी प्रतिष्ठान के सतीश चंद्र दास गुप्ता ने एक आकर्षक व्याख्यान दिया, जिसमें ब्रिटिश शासन से पहले भारत की समृद्धि, इसके राष्ट्रीय उद्योग की गिरावट और खद्दर आंदोलन के माध्यम से पुनरुद्धार की संभावनाओं को प्रस्तुत किया गया था। गांधी ने इन व्याख्यानों के आयोजन की सराहना की, जिसे उन्होंने न केवल शैक्षिक बल्कि मनोरंजक भी पाया। सूत कातने को बढ़ावा देने के लिए, अधिवेशन के दौरान प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिसमें विजेताओं को पुरस्कार भी दिए गए। गांधी ने सूत कातने की प्रतियोगिताओं को नियमित रूप से आयोजित करने पर जोर दिया। गांधी की सूत कातने की दृष्टि केवल एक व्यावहारिक कौशल से परे थी, उन्होंने इसे भारत के स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक, आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने का एक साधन माना।



राजेंद्र प्रसाद ने स्वदेशी प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह को संबोधित किया



प्रदर्शनी के कार्यकर्ता

रंगमंच की भूमिका

कांग्रेस अधिवेशन में लोगों को आगामी सत्र के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार करने के लिए देशप्रेम से ओत-प्रोत नाटकों की एक श्रृंखला प्रस्तुत की गई। इन नाटकों का उद्देश्य देशभक्ति जगाना, राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना और स्वतंत्रता संग्राम के बारे में जागरूकता फैलाना था। कुछ उल्लेखनीय नाटकों में 'पवित्र खादी' शामिल था, जो गांधी के स्वदेशी आंदोलन के एक प्रमुख पहलू के रूप में हाथ से काते और हाथ से बुने हुए खादी कपड़ों के महत्व को उजागर करता था। इसके अलावा, एक अन्य नाटक ''कित्तूर चेन्नम्मा'' था, जो कित्तूर की वीर रानी कित्तूर चेन्नम्मा के जीवन पर आधारित थी, जिन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ साहसपूर्वक लड़ाई लड़ी थी। साथ ही एक और नाटक ''संगोली रायण्णा'' था, जो बेलगाम के संगोली रायण्णा की कहानी बताता था, जो कित्तूर सैन्य के एक वरिष्ठ कमांडर थे, अपने लोगों (स्थानीय जमीदारों) से विश्वासघात के कारण उन्हें ब्रिटिश द्वारा फांसी दे दी गई थी। राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत इन नाटकों ने देशभक्ति को बढ़ावा देने, राष्ट्रीय गौरव व पहचान की भावना पैदा करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रंगमंच की शक्ति का लाभ उठाकर,

कांग्रेस का लक्ष्य जनता का समर्थन जुटाना, राष्ट्रीय चेतना की भावना पैदा करना और अंततः ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करना था।



कित्टूर चेनम्मा, जिन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ लड़ाई लड़ी



सांगोली रायन्ना
किसान नेता और कमांडर

संगीत समारोह

कांग्रेस अधिवेशन में एक अद्वितीय संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसकी व्यापक रूप से प्रशंसा कांग्रेस नेताओं और प्रतिनिधियों ने की। कर्नाटक के प्रसिद्ध कलाकारों ने संगीत समारोह में प्रदर्शन किया, जिनमें दिग्गज वीने शेषन्ना भी शामिल थे, जो लगभग पांच दशकों से अधिक समय तक मैसूर के मुख्य दरबार संगीतकार थे। मैसूर सरकार ने संगीतकारों को सम्मेलन में प्रदर्शन करने के लिए भेजा, जिससे सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा मिला। संगीत समारोह के मेजबानी के लिए स्पिनिंग हॉल के पास एक समर्पित कॉन्सर्ट हॉल बनाया गया था, जहाँ कन्नड़ रागों और धुनों का प्रदर्शन हुआ। महात्मा गांधी ने वीने शेषन्ना के प्रदर्शन में भाग लिया और ९० मिनट से अधिक समय तक ध्यान से सुना, जिससे संगीत के माध्यम से लोगों को एकजुट करने और राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा देने की उनकी सोच को दर्शाता है।



वीने शेषन्ना - मैसूर के दरबारी राग के संगीतकार

पम्पा सरोवर : जल भंडार

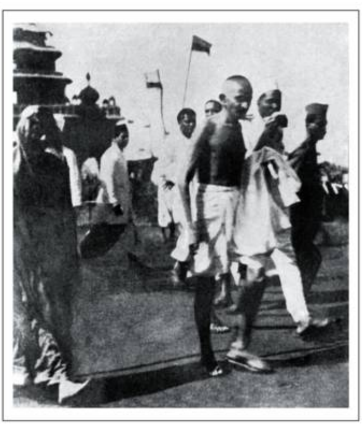
१९२४ के बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन में पानी की मांग को पूरा करने के लिए, एक जल भंडार का निर्माण किया गया और इसका नाम पम्पा सरोवर रखा गया, जो हम्पी कर्नाटक के पास कोप्पल जिले में तुंगभद्रा नदी के दक्षिण में स्थित पवित्र हिंदू झील की याद दिलाता है। आसपास के कुआँ या नदियों की अनुपस्थिति को देखते हुए, ५० x ५० फीट का एक विशाल कुआँ ४० फीट की गहराई तक खोदा गया, जिससे जल आपूर्ति सुनिश्चित हुई। भाप पंपों से लैस, कुआँ ३०,००० गैलन क्षमता वाले विशाल टैंक को भरता था, जिसे पाइपों के माध्यम से पूरे विजयनगर में जोड़ा गया। यह ऐतिहासिक कुआँ, जिसे अब कांग्रेस कुआँ के नाम से जाना जाता है, न केवल प्रतिनिधियों की प्यास बुझाता था बल्कि आज भी आसपास के क्षेत्र को पानी की आपूर्ति भी करता है। इसके महत्व को पहचानते हुए तथा इसे अतीत की बुद्धिमत्ता के प्रमाण के रूप में सावधानी पूर्वक संरक्षित किया जा रहा है।



जल भंडार



स्नान करने का स्थान



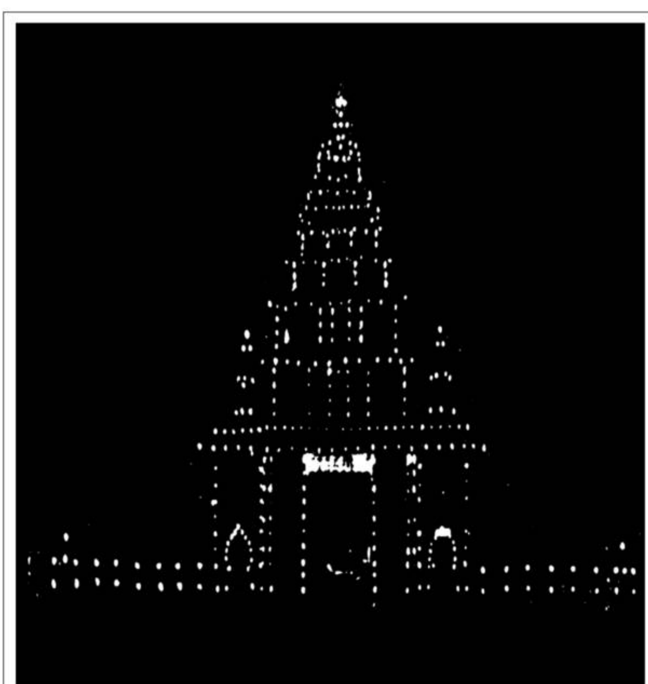
गोपुरा के सामने
सरोजिनी नायडू के साथ गांधीजी



गांधीजी का कुछ लोगों के साथ
शाम की सैर

प्रकाश की विशेष व्यवस्था

बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन के आयोजकों ने प्रकाश की व्यापक व्यवस्था की, जिससे रात में कार्यक्रम स्थल उत्सव के माहौल में बदल गया। मुख्य गोपुरा प्रवेश द्वार को इलेक्ट्रिक लाइट्स से रोशन करने के लिए विशेष व्यवस्था की गई थी। प्रदर्शनी के स्थलों को भी इलेक्ट्रिक लाइट्स से रोशन किया गया था, जिससे प्रदर्शनों को स्पष्ट रूप से देखा जा सके। पंडाल, समिति हॉल, कार्यालय, स्वयंसेवकों के बैरक और अध्यक्ष के निवास स्थान सहित अन्य क्षेत्रों को पेट्रोमैक्स प्रेशर लैंप से रोशन किया गया था। किटसन लाइट्स ने रसोई, भोजन हॉल, सड़कें और अन्य सार्वजनिक स्थानों को रोशन किया, जबकि डिट्ज लालटेन ने प्रतिनिधियों के आवास के लिए रोशनी प्रदान की।



गोपुरा का रात्रि दृश्य



कार्यकर्ता समूह

भोजन समिति

भोजन समिति में कुल पंद्रह सदस्य शामिल थे, जिसमें वामन राव इरानाडे सचिव के रूप में थे, सभी ने मिलकर अधिवेशन में शामिल होने वालों के लिए भोजन व्यवस्था की देखरेख की। भोजन समिति के कार्यकर्ता मुख्य रूप से हिंदुस्तानी सेवा दल के स्वयंसेवक थे, जिन्होंने समिति के सदस्यों द्वारा प्रदान किए गए प्रशिक्षण के बाद अधिवेशन में सम्मलित होने वाले लोगों को निर्बाध सेवा प्रदान की। प्रतिभागियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए, समिति ने एक रसोई और एक विशाल भोजन हॉल (जिसका आकार ५०० x १०० फीट था) की व्यवस्था की, जिसमें पारंपरिक कर्नाटक शैली में भोजन परोसा जाता था और जिसमें बड़ी संख्या में प्रतिभागी बैठ सकते थे। इसके साथ ही जिन प्रांतों को अपनी व्यवस्था करनी थी, उनके लिए अलग रसोई की भी व्यवस्था की गई। एक सुविधाजनक स्थान पर स्थित स्टोर ने आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति लागत मूल्य पर की। भोजन समिति के प्रयासों से प्रतिभागियों के खान-पान की जरूरतें पूरी हुईं, जिससे वे अधिवेशन की कार्यवाही पर ध्यान केंद्रित कर सकें।



भोजन समिति के कार्यकर्ता

स्वयंसेवी

बेलगाम कांग्रेस में स्वयंसेवी संगठन की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी। डॉ. एन.एस. हार्डिकर ने प्रशिक्षित स्वयंसेवियों को सुदृढ़ करने के लिए एक विस्तृत योजना बनाने में खास भूमिका निभाई, जो वित्तीय सीमाओं के बावजूद भी सफल रही। स्वयंसेवी बल में ११५६ सदस्य शामिल थे, जिनमें ८१७ सहायक, १४१ सहायिका (महिला स्वयंसेवी) और १९८ स्काउट शामिल थे। इन सभी स्वयंसेवियों को कर्नाटक, आंध्र, महाराष्ट्र, बॉम्बे और अन्य कन्नड़ भाषी क्षेत्रों से भर्ती किया गया था। साथ ही लगभग २७५ सहायकों ने विशेष रूप से शिविरों में पूर्णकालिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन स्वयंसेवियों ने भीड़ को नियंत्रण करने, यातायात प्रबंधन, रात्रि गश्त व सुरक्षा जैसी जिम्मेदारियों को संभाला और अपने अधिकारियों के मार्गदर्शन में अपने कार्यों को सराहनीय ढंग से निभाया।



स्वयंसेवी शिविर में मोहम्मद अली और अन्य नेताओं के साथ गांधीजी



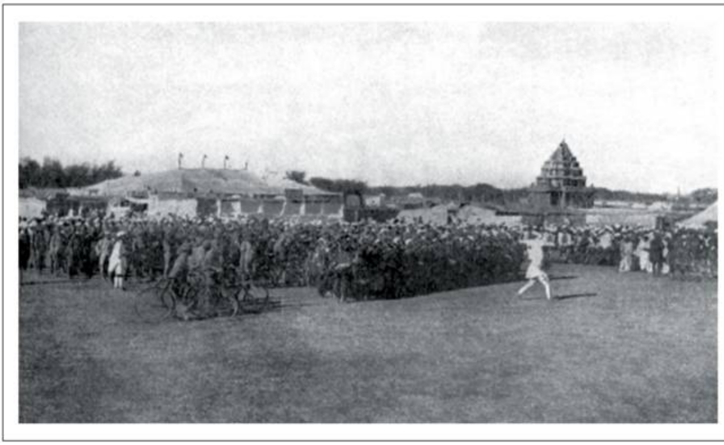
स्वयंसेवियों का सम्मान करते गांधी जी

डॉ. एन.एस. हार्डीकर

डॉ. एन.एस. हार्डीकर एक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व थे, जिन्होंने मेडिकल स्नातक के रूप में अपना करियर शुरू किया और बाद में एक कांग्रेस स्वयंसेवी बन गए। वह लाला लाजपत राय और जवाहरलाल नेहरू जैसे प्रमुख नेताओं के करीबी सहयोगी थे और उन्होंने कांग्रेस अधिवेशन में स्वयंसेवी कोर के कमांडर के रूप में भी अपनी सेवाएं दीं। तिलक और गांधी से प्रेरित होकर, उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में कदम रखा। डॉ. एन.एस. हार्डीकर ने अमेरिका में रहते हुए लाला लाजपत राय के साथ मिलकर काम किया, जिसमें उन्होंने लाला लाजपत राय के सचिव और यंग इंडिया के उप-संपादक के रूप में अपनी भूमिकाओं का निर्वहन किया। इसके अलावा, उन्होंने १९२३ में हिंदुस्तान सेवा दल के आयोजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें जवाहरलाल नेहरू अध्यक्ष और हार्डीकर सचिव थे। हार्डीकर का सेवा दल में योगदान अतुलनीय था, उन्होंने संगठन की स्थापना में मदद की, जिसका उद्देश्य कांग्रेस के लिए प्रशिक्षित स्वयंसेवियों का निर्माण करना था। उनके नेतृत्व कौशल ने उन्हें एक युवा आइकन का दर्जा दिलाया, तथा उनके स्वयंसेवियों ने बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन के प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें अतिथि प्रबंधन, रसोई कार्य, और स्वच्छता जैसे कार्य शामिल थे। सेवा दल का मुख्यालय शुरू में हुबली में स्थापित किया गया था, जिसे बाद में बागलकोट में स्थानांतरित कर दिया गया। हार्डीकर की विरासत स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान से कहीं आगे तक फैली हुई है, उन्होंने साम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए भी काम किया।



डॉ. एन.एस. हार्डीकर - स्वयंसेवी कोर के कमांडर



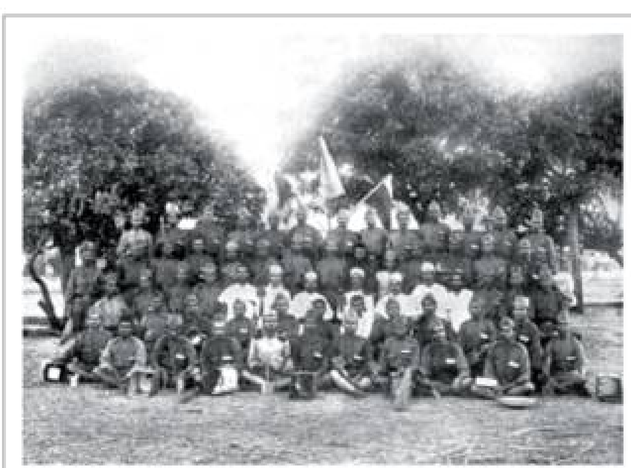
स्वयंसेवियों की रैली



स्वयंसेवियों की समीक्षा

स्वच्छता विभाग के स्वयंसेवी और कार्यकर्ता

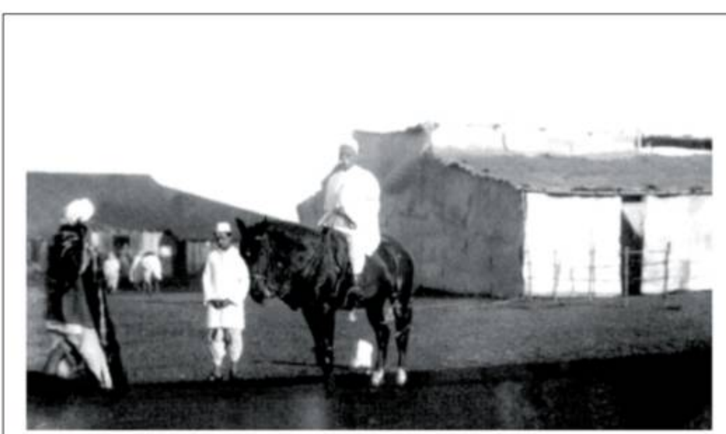
स्वच्छता विभाग के स्वयंसेवियों और कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस अधिवेशन के दौरान स्वच्छता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सचिव के रूप में डॉ. केलकर और सदस्य के रूप में वी.एम. बाक्रे के नेतृत्व में, उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि पूरे अधिवेशन के दौरान शौचालय, स्नानघर, रसोई कक्ष, समारोह हॉल और सड़कें साफ-सुथरी रहें। इन स्वयंसेवियों का सावधानी से चयन किया गया, उन्हें प्रशिक्षित किया गया और स्वच्छता को प्राथमिकता देने के लिए निर्देशित भी किया गया। नगरपालिका कर्मचारी और स्वयंसेवी मिलकर दिन-रात काम करते थे, यहाँ तक कि वे ऐसे काम भी करते, जिन्हें दूसरे करने से झिझकते थे, जैसे कि मल-मूत्र को साफ करना आदि। यह काम काका कालेलकर की सीधी देखरेख में था। गांधीजी ने स्वच्छता कार्य को बहुत महत्व दिया और इसे स्वयंसेवी प्रशिक्षण का आधार माना। उन्होंने कहा कि स्वच्छता विभाग की सफलता टीम वर्क और समर्पित स्वयंसेवकों के प्रभाव का परिणाम है। उनकी समर्पण और जिम्मेदारियों को स्वीकार करने के इस भाव ने गांधी जी की प्रशंसा अर्जित की, जिन्होंने उनके काम को ''सभी में सबसे अधिक सम्मानित'' माना।



स्वच्छता विभाग के स्वयंसेवी और कार्यकर्ता

व्यवस्थाओं की देख-रेख

बेलगाम में कांग्रेस अधिवेशन एक ऐतिहासिक घटना रही, जिसके लिए एक विशेष योजना और कार्यान्वयन की आवश्यकता थी। गंगाधरराव देशपांडे ने रिसेप्शन कमेटी के अध्यक्ष के रूप में और व्यवस्थाओं की देखरेख में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने ८० एकड़ फैले मैदान में घोड़े पर चढ़कर सारी व्यवस्थाओं की निगरानी की, यह कार्यों के प्रति उनके समर्पित भाव को बताता है। घोड़ा उनके गृह गाँव हुदली से लाया गया था, जो उनके समर्पण और ऊर्जा का प्रतीक बन गया। देशपांडे के जीवनीकार आर.एस. नारायण ने बुजुर्ग देशपांडे को मैदान में घोड़े पर चढ़ते हुए देखकर कहा, ''यह एक असमान्य, लेकिन सुखद दृश्य था''। उनकी जीवटता व उत्साह इतना प्रभावशाली था कि राजेंद्र प्रसाद ने टिप्पणी करते हुए कहा कि ''बूढ़े गंगाधर राव देशपांडे एक युवा व्यक्ति की तरह घोड़े पर सवार होकर काम की निगरानी करते थे''।



गंगाधरराव देशपांडे घोड़े पर सवार होकर व्यवस्था देख रहे हैं। पुंडलिक कतागड़े खड़े हैं।

दूसरे दिन की कार्यवाही

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ३९ वें अधिवेशन का दूसरा दिन २७ दिसंबर, १९२४ को महात्मा गांधी की अध्यक्षता में शुरू हुआ। दिन की शुरुआत स्वयंसेवियों द्वारा ''वंदे मातरम्'' और कन्नड़ में राष्ट्र गान गाने से हुई, इसके बाद हरेंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा एक सुंदर हिंदी गीत गाया गया, उन्हें अच्छी प्रतिक्रिया मिली और सभा ने ताली बजाकर उत्साहपूर्वक स्वागत किया। इसके बाद जैसे ही अध्यक्ष मंच पर आये, सभा में तालियाँ बज उठी और पूरा वातावरण ''महात्मा गांधी की जय'' के नारों से गूंज उठा। सुबह ११ बजकर २० मिनट पर, गांधीजी ने पहला शोक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें पहले दिन की कार्यवाही में इसे शामिल नहीं करने के लिए माफी मांगी गई। इसके बाद कांग्रेस ने शोक संवेदना व्यक्त की और शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना जाहिर की।

कांग्रेस अधिवेशन के प्रमुख संकल्प

१९२४ का बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था। इस ऐतिहासिक अधिवेशन में कई प्रमुख प्रस्ताव पारित किए गए, जिनमें से पहला प्रस्ताव महात्मा गांधी द्वारा पेश किया गया था। यह प्रस्ताव दिवंगत व्यक्तियों को श्रद्धांजलि देने के लिए एक शोक प्रस्ताव था, जिसे एक मिनट की मौन प्रार्थना के बाद सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

संकल्पों की मुख्य बातें निम्नलिखित हैं -

स्वतंत्रता संग्राम में एकता और कताई विशेष अधिकार -
बेलगाम अधिवेशन में कांग्रेस और स्वराज पार्टी के बीच एकता को बढ़ावा देने वाला एक प्रस्ताव पारित किया गया था। इसके अलावा, इसने असहयोग आंदोलन को एक राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में निलंबित करने की पुष्टि की, सिवाय इसके कि यह भारत के बाहर से बने कपड़े के उपयोग या

पहनने से इनकार करने, हाथ से काते व हाथ से बुने खादी के प्रसार, विभिन्न समुदायों विशेष रूप से हिंदू और मुसलमानों के बीच एकता को बढ़ावा देने व अस्पृश्यता को हटाने से संबंधित हो। साथ ही नियमों में संशोधन करके, कांग्रेस सदस्यों के लिए खादी पहनना और खादी के प्रचार के लिए प्रति वर्ष कम से कम २०,००० गज धागा उत्पादन में योगदान देना अनिवार्य कर दिया गया। इसके अलावा, राजाओं, धनी वर्गों और व्यापारियों से खादी आंदोलन का समर्थन करने की अपील की गई।

सेवाओं की सराहना -

कांग्रेस ने विदेशों में रह रहे भारतीयों के लिए की गई सेवाओं की सराहना की, विशेष रूप से बर्मा में और केन्या में बसने वालों के लिए श्री वाजे और पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा की गई सेवाओं की सराहना की।

सांप्रदायिक हिंसा की निंदा -

कांग्रेस ने कोहाट और गुलबर्गा में मुसलमानों व हिंदुओं के बीच सांप्रदायिक हिंसा की निंदा की, गुलबर्गा दंगों में पीड़ितों के प्रति संवेदना व्यक्त की और उस शहर में धार्मिक स्थलों पर की गई तोड़फोड़ की निंदा की।

अस्पृश्यता निवारण -

कांग्रेस ने समाज के वंचित वर्गों के हितों और सामाजिक विकास की रक्षा के लिए एक प्रस्ताव पारित किया। इस प्रस्ताव में कांग्रेस कार्यकर्ताओं से आग्रह किया गया कि वे वंचित वर्गों के सामाजिक उत्थान के लिए काम करें, खासकर उन्हें मंदिरों, कुओं, दुकानों, होटलों और स्कूलों जैसे सार्वजनिक स्थानों में समान अधिकार दिलाने के लिए।

प्रवासी भारतीयों को समर्थन -

कांग्रेस ने बर्मा, दक्षिण अफ्रीका, और केन्या में बसे भारतीय प्रवासियों के साथ सहानुभूति व्यक्त की, जो उन देशों की साम्राज्यवादी सरकारों के साथ सामाजिक न्याय के लिए लड़ रहे थे।

अकाली आंदोलन -

कांग्रेस ने अकाली आंदोलन की सराहना की, जो १९२० में अमृतसर, पंजाब में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ एक जन आंदोलन के रूप में शुरू हुआ

था। इस आंदोलन का उद्देश्य अस्पृश्यता को समाप्त करना और मंदिरों में निम्न जाति के सिखों के प्रवेश के लिए लड़ना था।

राष्ट्रीय शिक्षा का समर्थन -

कांग्रेस ने सभी प्रांतीय कांग्रेस समितियों से समाज के कल्याण के लिए राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित करने की अपील की। इन स्कूलों का उद्देश्य अस्पृश्यता उन्मूलन, शिक्षा के माध्यम से कताई और बुनाई को बढ़ावा देना, मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना और शारीरिक शिक्षा और आत्मरक्षा में प्रशिक्षण प्रदान करना था।

ड्रग और अफ़ीम की तस्करी -

कांग्रेस ने सरकार से युवाओं द्वारा ड्रग्स और अफीम के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने का आग्रह किया, जिसमें नैतिकता और समाज पर पड़ने वाले इसके नकारात्मक प्रभाव का हवाला दिया गया था।

सशुल्क राष्ट्रीय सेवा -

कांग्रेस ने राष्ट्रीय सेवा के लिए स्वयंसेवियों की आवश्यकताओं को महसूस किया, क्योंकि उन्होंने अधिवेशन में स्वयंसेवियों व हिंदुस्तानी सेवा दल द्वारा किए गए कार्यों और भव्य अधिवेशन को सफल बनाने में उनके योगदान को देखा था।

कांग्रेस ने यूपी के कानपुर में ४०वां अधिवेशन बुलाने का निर्णय लिया।

प्रमुख संकल्पों के प्रमुख वक्ता



देशबंधु चितरंजन दास



पंडित मोतीलाल नेहरू



मौलाना मोहम्मद अली



श्रीनिवासराव कौजलगी



मौलाना हज़रत मोहानी



एन. सी. केलकर



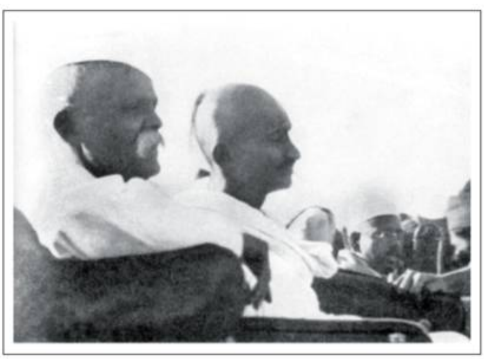
कांग्रेस के समापन सत्र में गांधीजी और सरोजिनी नायडू अन्य लोगों के साथ

समापन सत्र

३९वां भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन २७ दिसंबर को संपन्न हुआ, जिसमें स्वराज पार्टी के सचिव मोतीलाल नेहरू ने सम्मानित सभा को धन्यवाद प्रकट किया। यह भाव महत्वपूर्ण था, क्योंकि इसका उद्देश्य स्वराज पार्टी के नेताओं, सी. आर. दास और मोतीलाल नेहरू के बीच दूरियों को पाटना और मतभेदों को सुलझाना था। पंडित मोतीलाल नेहरू ने पारित प्रस्ताव के महत्व को स्वीकार करते हुए महात्मा गांधी को धन्यवाद प्रकट किया और कहा, ''मैं आपको यह कहने की उम्मीद करता हूँ कि आप महात्माजी की बात से सहमत हैं और आप उनके द्वारा आपके ऊपर रखी गई जिम्मेदारी को स्वीकार करते हैं।'' नेहरू ने जोर दिया कि इस प्रस्ताव को पारित करना केवल एक औपचारिकता नहीं थी, बल्कि गांधी द्वारा रेखांकित सिद्धांतों को बनाए रखने के लिए एक प्रतिबद्धता थी। नेहरू जी ने विश्वास जताया कि सभा गांधी जी के आह्वान का जवाब देगी और उनके समापन भाषण में दिए गए संदेश का समर्थन करेगी। यह आह्वान स्वराजवादियों, अपरिवर्तनवादियों और अन्य संबंधित लोगों से अपने संकल्प को पूरा करने के लिए था। इस प्रस्ताव का स्वागत जोरदार तालियों और ''महात्मा गांधी की जय'' के नारों के साथ हुआ और शाम ५:४५ बजे कांग्रेस की कार्यवाही संपन्न हुई।

उपसंहार

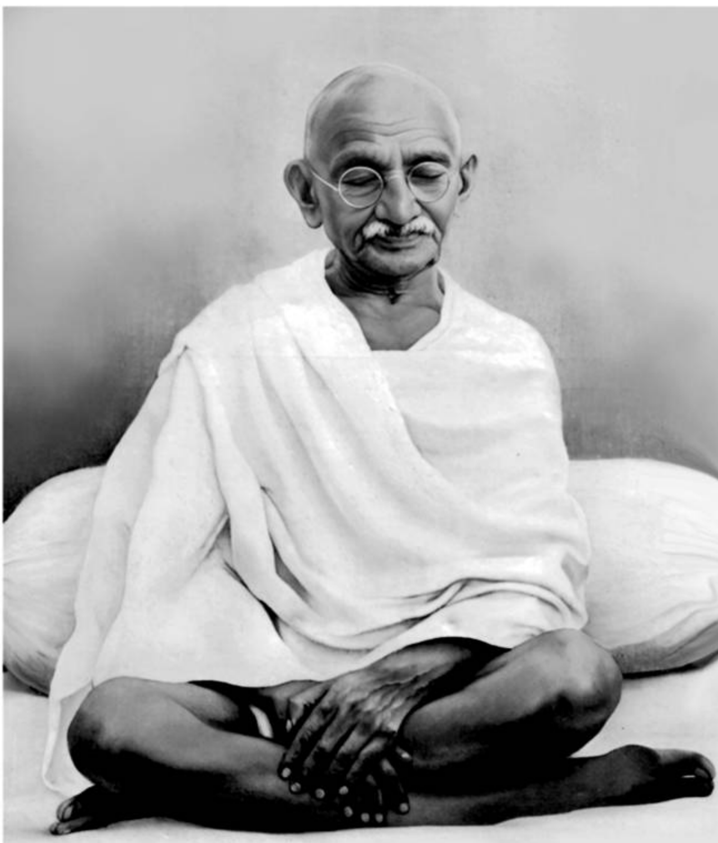
१९२४ में बेलगाम में आयोजित ३९वां भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक ऐतिहासिक और राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण घटना थी। इस अधिवेशन की विशेषता यह भी थी कि यह महात्मा गांधी की अध्यक्षता वाला एकमात्र कांग्रेस अधिवेशन था। साथ ही इसने उनके बढ़ते प्रभाव को भी अवलोकित किया। यह अधिवेशन कांग्रेस के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर स्थापित करने में सफल रहा, जिसने पार्टी की अहिंसक संघर्ष व रचनात्मक कार्य के प्रति दृढ़ संकल्प और समर्पण को दर्शाया। इस अधिवेशन ने एकता और सामूहिक कार्रवाई पर जोर दिया, जिसने भारत की स्वतंत्रता संग्राम में भविष्य के आंदोलनों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।



गांधीजी रेलवे स्टेशन जाते हुए, उनके साथ गंगाधरराव देशपांडे भी हैं।



कांग्रेस अध्यक्ष एम. के. गांधी, मोतीलाल नेहरू, डॉ. किचलू, एम. ए. जिन्ना, मोहम्मद अली, सरोजिनी नायडू और शौकत अली के साथ, ३१ दिसंबर, १९२४ को मुंबई के ग्लोब थिएटर में आयोजित मुस्लिम लीग के वार्षिक अधिवेशन में सदन को संबोधित करते हुए।



(महात्मा गांधी - दूरदर्शी नेता जिन्होंने भारतीय राजनीति को एक सही दिशा दी।)

बेलगाम अधिवेशन का यह सचित्र विवरण, सिबी के. जोसेफ और बसवराज एन. अक्की द्वारा लिखित व संकलित, घटना के शताब्दी वर्ष में एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामयिक प्रकाशन है। यह चर्चित कथन है कि एक तस्वीर हजारों शब्दों से अधिक मूल्यवान होती है, क्योंकि चित्रात्मक रूप हमारे मस्तिष्क के लिए समझना आसान होता है। इस सचित्र विवरण के माध्यम से हमें यह देखने का अवसर प्राप्त होता है कि किस प्रकार इस ऐतिहासिक अधिवेशन का आयोजन अत्यधिक सूक्ष्मता के साथ किया गया था। यह पुस्तक पाठकों को राष्ट्रीय आंदोलन में कर्नाटक की महत्वपूर्ण भूमिका की झलक देता है, जो छात्रों और इतिहासकारों के लिए अत्यंत मूल्यवान साबित होगा। लेखकों का इस कार्य में निहित जुनून और समर्पण की सराहना की जानी चाहिए।

जॉन एस. मूलक्कट्टु

मुख्य संपादक

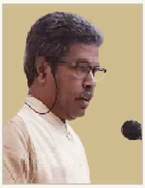
गांधी-मार्ग पत्रिका, गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

महात्मा गांधी की अध्यक्षता में १९२४ का बेलगाम अधिवेशन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। जब देश औपनिवेशिक शासन की जटिलताओं से गुजर रहा था, यह अधिवेशन स्वतंत्रता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बन गया। इस पुस्तक में गांधीजी के नेतृत्व, उनके अहिंसक प्रतिरोध व रचनात्मक कार्य के दृष्टिकोण को विस्तार से बताया गया है। यह पुस्तक बताती है कि कैसे गांधीजी को अधिवेशन की अध्यक्षता स्वीकार करनी पड़ी, इसके आयोजन के पीछे की कहानी, साथ ही पारित प्रमुख प्रस्तावों के बारे में भी बताया गया है। यह विवरण गांधी के दर्शन व रणनीति को समझने में मदद करती है और यह दिखाती है कि कैसे उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के पथ को आकार दिया और भविष्य में क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए मंच तैयार किया।

डी. जीवन कुमार

पूर्व निदेशक, सेंटर फॉर गांधीयन स्टडीज,

बेंगलोर विश्वविद्यालय और मैनेजिंग ट्रस्टी, सर्वोदय इंटरनेशनल ट्रस्ट



सिबी के. जोसेफ वर्तमान में श्री जमनालाल बजाज मेमोरियल लाइब्रेरी एंड रिसर्च सेंटर फॉर गांधीयन स्टडीज, सेवाग्राम आश्रम प्रतिष्ठान, वर्धा, महाराष्ट्र में निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। उनकी पी-एच.डी. गांधीयन थॉट एंड डेवलपमेंट स्टडीज में है। एक प्रतिष्ठित अकादमिक और शोधकर्ता के रूप में, उन्होंने कई पुस्तकों का लेखन और संपादन किया है, साथ ही उनके कई शोध पत्र व लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।



बसवराज एन. अक्की एक पुरालेखविद् और इतिहासकार हैं, जिन्होंने इतिहास से संबंधित विभिन्न शोध अध्ययनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित प्रमुख शोध परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया है। उनकी पी-एच.डी. इतिहास में है। वह कर्नाटक के डांडेली में सरकारी प्रथम ग्रेड कॉलेज में इतिहास के प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं।

A Project of Library and Research Centre
Sevagram Ashram Pratishthan
Wardha, Maharashtra
http://sevagramashram.org.in
https://nonvpi.in

9 788192 651545